फुलवाड़ी

(भाग - 4)

चारिम कक्षाक मैथिली-भाषाक पाठ्यपुस्तक

(एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार, पटना द्वारा विकसित)
बिहार स्टेट टेक्स्ट बुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना द्वारा प्रकाशित

दिशा बोध-सह-पाठ्य पुस्तक विकास समन्वय समिति

1. **श्री राजेश भूषण**
   राज्य परियोजना निदेशक, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना
2. **हसन वारिस**
   निदेशक (प्रभारी), एस.सी.ई.आर.टी., पटना
3. **श्री मुखदेव सिंह**
   क्षेत्रीय शिक्षा उप निदेशक, तिरहुत प्रमण्डल, मुजफ्फरपुर
4. **श्री रामेश्वर पाण्डेय**
   कार्यक्रम पदाधिकारी, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना
5. **श्री वसंत कुमार**
   शैक्षिक निबन्धक, बी.टी.बी.सी., पटना
6. **डॉ० सैयद अब्दुल मोइन**
   सदस्य सचिव, विभागाध्यक्ष, एस.सी.ई.आर.टी., पटना
7. **डॉ० श्वेता सांडिल्य**
   शिक्षा विशेषज्ञ, यूनिसेफ, पटना
8. **डॉ० ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी**
   प्राचार्य, टी.आई.एच.एस., पटना

पाठ्य-पुस्तक विकास समिति

लेखक सदस्य :

1. **डॉ0 अरुण कुमार झा,** व्याख्याता (मैथिली)
   राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, पटना सिटी
2. **डॉ0 राजकुमार झा,** व्याख्याता (मैथिली)
   राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, पटना सिटी
3. **श्री कृष्णदेव झा,** सहायक शिक्षक,
   उत्क्रमित मध्य विद्यालय सहोड़ा, प्रखंड-हायाघाट, जिला- दरभंगा
4. **श्रीमती अमिता रतन,** शिक्षिका,
   मध्य विद्यालय, गंगजला, सहरसा सदर, सहरसा

समन्वयक :

1. **डॉ० अर्चना,** व्याख्याता,
   एस.सी.ई.आर.टी., पटना

समीक्षक :

1. **श्री मोहन भारद्वाज**
   साहित्यकार, पटना
2. **डॉ० इन्दिरा झा**
   वाचक, मैथिली विभाग, रामकृष्ण द्वारिका महाविद्यालय, कंकड़बाग, पटना

अभार : यूनिसेफ, पटना

आमुख

ई पाठ्यपुस्तक फुलवाड़ी भाग-4 राष्ट्रीय 'पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005)' क अनुरूप तैयार कयल गेल नवीन पाठ्यक्रम पर आधारित अछि । पाठ्यक्रमक स्वरूप निर्धारण एस० सी० ई० आर० टी० बिहार, पटनाक सफल मार्गदर्शन, विभिन्न गोष्ठी- कार्यशाला आ विषय-विशेषज्ञक गहन विमर्शक पश्चात सम्पन्न भेल अछि । पाठ्यसामग्रीक चयन विद्यार्थीक भाषायी विकासक समग्रताकेँ ध्यानमे राखि कयल गेल अछि । रटंत विद्याक..... परिचित परम्परासँ आगाँ बढ़ि सम्पूर्ण समाज, प्रकृति, विज्ञान, इतिहास, लगपासक ज्ञान क्षेत्रकेँ अपनामे समेटैत विद्यार्थीक मानसिक सोच विचार आ ओकर जिज्ञासा, उत्सुकताकेँ बढ़यबाक उद्देश्यसँ कयल गेल अछि । किछु ठेठ मैथिली शब्दक प्रयोग कयल गेल अछि जे आइ अपेक्षाकृत बहुत बच्चा लोकनि ओकरा बिसरि रहल छथि ।

एहि पुस्तकमे पाठ्यक्रमक अनुसार कुल निर्धारित (12) बारह गोट पाठ अछि जाहिमे छओ गोट गद्य आ छओ गोट पद्य अछि । एकर अतिरिक्त कुल तीन गोट पाठक अलगसँ समावेश कयल गेल अछि जकरा बच्चा लोकनि पढ़ताह, बुझताह आ आनन्द उठओताह ।

गद्य-पाठमे सर्वप्रथम 'अष्टावक्र' शीर्षक पौराणिक कथाक उद्देश्य बच्चाकेँ मिथिलाक अपरिचित विशिष्ट व्यक्तित्वसँ परिचित करायब थिक संगहि विकलाङ बच्चामे आत्मविश्वास जगाकय हुनका शिक्षाक मुख्यधारासँ जोड़बाक अछि । पर्यावरण-प्रदूषण आइ एक पैघ समस्या अछि जकर सुरक्षा करब प्रत्येक मानवक धर्म थिक । हमर बहुतरास मान्यता पर्यावरणसँ जुड़ल अछि तेँ एहि पाठक माध्यमसँ ओहि मान्यताकेँ स्थापित करबाक आ ओकरा व्यवहार मे लयबाक हेतु बच्चा केँ प्रेरित करबाक एक लघु प्रयास थिक । मिथिलाक लोकप्रिय पर्व 'जूड़-शीतल' पाठक उद्देश्य बच्चामे मिथिलाक संस्कृति, लोक-व्यवहार, सामाजिक मान्यता आ सद्भाव तथा रीति-रिवाजसँ परिचित करायब थिक । पशु-पक्षी पर आधारित 'दुष्ट खिखिर' कथाक उद्देश्य अछि जे बच्चाकेँ दुष्टक सहायता सोचि विचारि कय करबाक चाही । शिक्षाक संग खेल-कूदक महत्त्व कम नहि होइछ तेँ 'हॉकीक जादूगर' पाठक माध्यमसँ भारतक विशिष्ट खिलाड़ी, विशिष्ट खेल आ खेलमे नैतिकताक परिचय देबाक प्रयास कयल गेल अछि । संगहि एहि बातकेँ बुझबाक थिक जे खेलाड़ीक रूपमे सेहो समाज आ देशक सेवा कयल जा सकैत अछि । महापुरुषक

जीवनी प्रेरणास्रोत होइत अछि । एही उद्देश्यसँ महान वैज्ञानिक 'जगदीशचन्द्र बसु' पाठ निर्धारित कयल गेल अछि । एहि पाठक माध्यमसँ बच्चामे विज्ञानक प्रति झुकाव एवं जिज्ञासु-प्रवृत्ति केँ बढ़ाबा देब अछि ।

एही तरहेँ पद्यमे सेहो कुल छओ गोट पाठक चयन कयल गेल अछि जे क्रमशः प्राकृतिक-सौन्दर्य, राष्ट्रीय-एकता, सदाचारसँ सम्बन्धित अछि ।

मिथिलांचल मे बाढ़ि अद्यपर्यन्त एक अनिवार्य प्राकृतिक आपदा थिक तेँ एहिसँ सम्बन्धित एकटा कविताक समावेश कयल गेल अछि । एक गोट पाठ वंदनामूलक अछि जे राष्ट्र-कल्याणक आशा आ इच्छासँ युक्त अछि । अन्तिम कविता मनोरंजनात्मक अछि । एहि कविताक मूल उद्देश्य बच्चाकेँ मैथिलीभाषाक विलुप्त होइत खाँटी शब्द परम्परासँ परिचय करायब थिक । उपर्युक्त पाठक अतिरिक्त दू गोट कथाकेँ पाठ्यपुस्तकमे समाविष्ट कयल गेल अछि जे बच्चाकेँ मात्र पढ़बाक, बुझबाक आ आनन्द उठयबाक उद्देश्यसँ देल गेल अछि ।

भाषा पुस्तकक मूल उद्देश्य अछि बच्चाकेँ भाषामे कुशल बनायब । एहि उद्देश्यसँ शब्द भेद, लिङ, वचन आदिकेँ पाठसँ जोड़ैत अभ्यास-कार्य निर्धारित कयल गेल अछि । प्रश्न लिखित, मौखिक आ अनुमानमूलक अछि । संगहि भाषाक विभिन्न कुशलताकेँ विकसित करबाक हेतु परियोजनात्मक-कार्य निर्धारित कयल गेल अछि जाहिसँ विद्यार्थीमे सम्बन्धित ज्ञानक वृद्धि होयत । मिथिलाक्षरक ज्ञान करयबाक उद्देश्यसँ किछु मिथिलाक्षरमे संयुक्ताक्षर शब्दक समावेश सेहो कयल गेल अछि । यद्यपि पाठांतमे कठिन शब्दक अर्थ दय देल अछि तथापि शब्दकोश देखबाक विधि आ प्रवृत्ति जगयबाक उद्देश्यसँ पुस्तकक अन्तमे ओहि समस्त शब्दकेँ वर्णानुक्रमे दय देल गेल अछि । शिक्षकसँ निवेदन जे ओ एहिकार्यमे बच्चाकेँ सहयोग करथि। यद्यपि एहि पाठ्यपुस्तकक निर्माण बच्चाक आयु एवं कक्षाक अनुकूल कयल गेल अछि तथापि एहिमे त्रुटि भय सकैत अछि । तेँ सुधीजन सँ निवेदन जे ओहि दिस ध्यान आकृष्ट कराय पुस्तककेँ भविष्य मे सर्वथा समीचीन बनयबामे अपन सहयोग करथि ।

एहि पुस्तकमे जाहि रचनाकारक रचनाक समावेश कयल गेल अछि तिनका प्रति आभार आ कृतज्ञता प्रकट करैत आशा करैत छी जे ई पुस्तक बच्चालोकनिक हेतु ज्ञानवर्द्धक होयत इत्यलम् ।

हसन वारिस

निदेशक (प्रभारी)

विषय-सूची

1.	वन्दना	01 - 04
2.	अष्टावक्र	05 - 09
3.	दोहा	10 - 13
4.	पर्यावरण-प्रदूषण	14 - 19
5.	एकबुद्धि बेङ	20 - 21
	अतिरिक्त पाठ	
6.	हम छी भारत-वासी	22 - 26
7.	जूड़-शीतल	27 - 31
8.	नचनी नाच नचौलक बाढ़ि	32 - 36
9.	दुष्ट खिखिर	37 - 42
10.	शरीर एक पूजी	43 - 44
	अतिरिक्त पाठ	
11.	तरकारीक कुश्ती	45 - 51
12.	हॉकीक जादूगर	52 - 57
13.	भिनसर	58 - 63
14.	जगदीशचन्द्र बसु	64 - 70
15.	मिथिलाक्षर	71 - 77

1

वन्दना

दिअ वरदान । हे भगवान ।
हम अबोध शिशु नहि मति भाषा
केवल एक अहिँक अछि आशा
करु करुणा बालक पर ईश्वर
हटओ हमर अज्ञान ।
दिअ वरदान ।।

लघु रहितहुँ अछि विपुल मनोरथ
नहि पद सबल तथा अविदित पथ
निर्बल हृदय बीच परमेश्वर
कय आलोक प्रदान ।
दिअ वरदान ।।

अपन युगक हम अरुण किरण भय
चमकि उठी नभमे अति द्युतिमय
जागओ हमर देशमे सहसा
ओ बिसरल अभिमान ।
दिअ वरदान ।।

रहितहुँ एक अनेक कहाबी
रहि अभेद किअ भेद देखाबी
हरिअ कुमति उरसँ जगदीश्वर
कय विश्वक कल्याण ।
दिअ वरदान ।।

– **ईशनाथ झा**

प्रश्न ओ अभ्यास

पाठमे

(क) निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर दिअ :-

1. बालककेँ किनकर आशा छनि ?
2. बालक ईश्वरसँ की हटयबाक लेल प्रार्थना करैत अछि ?
3. बालक ककर कल्याणक हेतु वरदान माङि रहल अछि ?
4. बालक देशमे कथीकेँ जगयबाक लेल वरदान माङि रहल अछि ?
5. एहि कवितामे कवि की कहय चाहैत छथि ?

(ख) रिक्त स्थानक पूर्ति करू :-

1. लघु रहितहुँ अछि .....
2. चमकि उठी ..... अति द्युतिमय
3. रहितहुँ एक ..... कहाबी
4. रहि अभेद किअ ..... देखाबी

(ग) निम्नलिखित पाँतीक अर्थ स्पष्ट करू :-

1. अपन युगक हम अरुण किरण भय
   चमकि उठी नभमे अति द्युतिमय ।
2. रहितहुँ एक अनेक कहाबी
   रहि अभेद किअ भेद देखाबी ।

भाषा-अध्ययन :-

(घ) निम्नलिखित शब्दक विपरीतार्थक शब्द लिखू -

आशा -

लघु -

सबल -

एक -

अभेद -

कुमति -

(ङ) अपन पाठसँ ओहन शब्द ताकू जकरा उनटो लिखलासँ सार्थक शब्द बनैत हो,

जेना -

सब - बस

रहल - लहर

पाठसँ आगू -

(च) 1. अपन पाठ्यपुस्तकक अतिरिक्त कोनो दू गोट वन्दना कविताक चयन कय वर्गमे सुनाउ ।

शब्दार्थ

वरदान	–	आशीर्वाद
करुणा	–	दया
अविदित	–	जे नहि बूझल हो ।
द्युतिमय	–	बिजली जकाँ ।
अभेद	–	जकरामे भेद नहि हो ।
अबोध	–	जकरा ज्ञान नहि हो ।
मति	–	बुद्धि
विपुल	–	पैघ, विशाल
पद	–	पएर
पथ	–	रस्ता
अरुण	–	सूर्य
किरण	–	प्रकाश
नभ	–	आकाश
सहसा	–	एकाएक
कुमति	–	खराब विचार
जगदीश्वर	–	जगत केर मालिक, ईश्वर

●

2

अष्टावक्र

महाराज जनक मिथिलाक महाराज छलाह । महाराज जनक बड़ पैघ विद्वान छलाह । हुनका राज्यमे बड़ पैघ-पैघ विद्वान लोकनि रहैत छलाह । ओहि विद्वान सबमे 'दण्डी' नामक एकटा बड़ पैघ विद्वान सेहो छलाह । हुनक योग्यताक आगू कोनो विद्वान नहि ठठथि । महाराज जनक हुनक बड़ आदर करैत छलथिन ।

मुदा दण्डीमे एकटा बड़ पैघ ऐब छलनि । ओ घमण्डी छलाह ।

महाराज जनकसँ ई आज्ञा कराय लेने रहथि जे - 'जे केओ विद्वान हमरासँ शास्त्रार्थमे हारि जयता से जेलमे पठाय देल जयता ।'

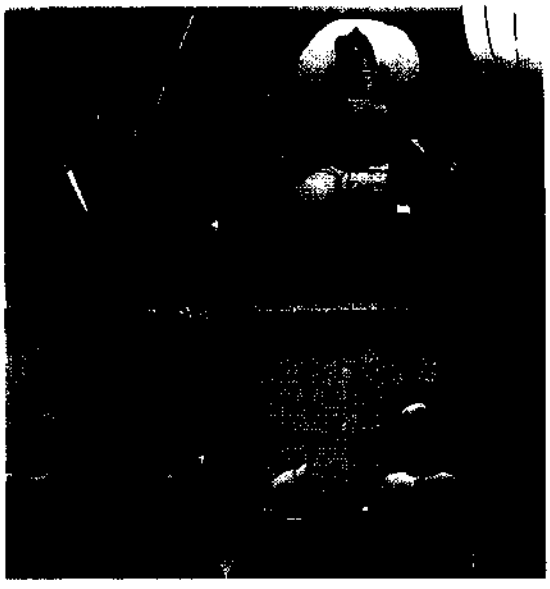

कतेको विद्वान दण्डीसँ शास्त्रार्थमे हारि जेलमे बन्द भय गेलाह । तँ किनको साहस नहि होइनि जे दण्डीसँ शास्त्रार्थ करी ।

एकदिन एकटा नेना महाराज जनकक दरबारमे आएल । ओकरा देहमे कइएक ठाम कुब्बड़ छलैक । ओकर रूप देखितहि लोककेँ हँसी लागि जाइक । ओ नेना छल तँ वयसक छोट, मुदा रहय बड़ पैघ विद्वान । कम्मे अवस्थामे ओ सम्पूर्ण शास्त्र कण्ठस्थ कय चुकल छल । ओहि नेनाक नाम छलैक अष्टावक्र ।

अष्टावक्रक पिता सेहो बड़ पैघ विद्वान छलाह, मुदा दण्डीसँ शास्त्रार्थमे हारि जेलमे बन्द कय देल गेल छलाह । छोट वयसक अष्टावक्र अपन पिताकेँ जेलसँ मुक्त करबय लय आयल छल ।

अष्टावक्र महाराज जनककेँ कहलकनि– "महाराज जनक ! हम दण्डीसँ शास्त्रार्थ करब ।" ओकर ई कथा सुनि महाराज सहित सब विद्वान आ दरबारी अवाक भय गेलाह । कतय दण्डी सन दिग्गज विद्वान आ कतय ई नान्हिटा बालक ! सब ओकरा बहुत बुझौलक मुदा ओ अपन जिद्द पकड़नहि रहल ।

अंतमे महाराजक आज्ञासँ शास्त्रार्थ आरम्भ भेल । सब लोक तमाशा देखय लागल। महाराज जनक तँ अपन आसन पर उत्सुक भय सुनैत छलाहे । दण्डी जतेक प्रश्न कयल तकरा सभक शुद्ध उत्तर अष्टावक्र दय देलक । आब तँ सभकेँ टराटक लागि गेलैक । जखन अष्टावक्रक पारी आयल, तखन ओ तेहन प्रश्न पुछलकनि, जकर दण्डी कोनो उत्तर नहि दय सकलाह । आब तँ दण्डीक सब घमण्ड चूर भय गेलनि । हुनका मुँहसँ बकार नहि फूटनि । अपन सनक हुनक मुँह भय गेलनि। एकटा छोट नेनासँ हारि जयबाक तँ कष्ट रहबे करनि संगहि आब अपनहु जेल जायब, तकरो शंका होअय लगलनि ।

अष्टावक्र जीति गेल । दण्डी हारि गेलाह । सर्वत्र ओहि नेनाक प्रशंसा होअय लगलैक । महाराज जनक ओकर बड़ सम्मान कयलथिन आ कहलथिन – "रूपसँ केओ सुन्दर नहि होइत अछि, गुणसँ लोक सुन्दर होइत अछि । अहाँकेँ जे मङबाक इच्छा हो से माङू ।"

नेना अष्टावक्र बाजल – "महाराज ! अपनेक ओहिठाम जतेक विद्वान जेलमे बन्द छथि, सबकेँ छोड़ि देल जाइनि ।"

अष्टावक्रक अनुरोध पर सब विद्वानकेँ जेलसँ मुक्त कय देल गेलनि । महाराज जनक अष्टावक्रकेँ बहुतो सोना, हीरा, मोती आदि इनाम दय विदा कयलथिन ।

– आद्या झा

प्रश्न ओ अभ्यास

पाठमे

(क) निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर दिअ :-

1. दण्डी के छलाह आ कतय रहैत छलाह ?
2. अष्टावक्र अपन पिताकेँ कोना छौड़ैलक ?
3. घमण्डक फल केहन होइत छैक ?
4. गुण पैघ होइत छैक अथवा रूप ?

(ख) खाली स्थान केँ भरू :-

1. महाराज जनक ..... राजा छलाह ।
2. दण्डी मे एकटा बड़ पैघ ..... छलनि ।
3. छोट वयसक अष्टावक्र अपन पिताकेँ जेलसँ ..... करबय लय आयल छल ।
4. आबतँ दण्डीक सब ..... चूर भय गेलनि ।

(ग) निम्नलिखित वाक्य मे सही ☑ एवं गलत ☒ क चिह्न लगाउ :-

1. दण्डी घमंडी छलाह । ☐
2. अष्टावक्र बड़ सुन्दर बालक छल । ☐
3. अष्टावक्र वयसमे रहय छोट मुदा बड़ पैघ विद्वान रहय । ☐
4. अष्टावक्र शास्त्रार्थमे दण्डी सँ हारि गेल । ☐

(घ) के कहलनि ? ककरा कहलनि :-

1. जे केओ विद्वान हमरासँ शास्त्रार्थ मे हारि जयता से जेलमे पठाय देल जयता ।
2. हम दण्डीसँ शास्त्रार्थ करब ।
3. रूपसँ केओ सुन्दर नहि होइत अछि गुणसँ लोक सुन्दर होइत अछि ।
4. अपनेक ओहिठाम जतेक विद्वान जेलमे बन्द छथि, सबकेँ छोड़ि देल जाइनि ।

भाषा अध्ययन

(ङ) पाठ मे आयल शब्दकेँ नीचा बनल सारणी मे भरू :-

संज्ञा

व्यक्तिवाचक		जातिवाचक	भाववाचक	समूहवाचक	द्रव्यवाचक
1.	दण्डी	विद्वान	आदर	जेल	सोना
2.					
3.					
4.					
5.					

पाठसँ आगू

(च) 1. पुस्तकालयमे पुस्तकसँ बहुत प्राचीन (पौराणिक) कालक कथा सभ ताकिकेँ पढ़ू।

2. की अहाँक जानकारीमे कोनो विकलाङ व्यक्ति छथि, जनिकर नाम-यश चारूकात पसरल छनि । यदि नै, तँ एहन व्यक्ति सभक सम्बन्धमे जानकारी एकट्ठा कय ओकर विवरण लिखू ।

शब्दार्थ

उत्सुक	–	इच्छुक
नान्हिटा	–	छोट सन
टराटक	–	एकटक
ठठब	–	सकब
दिग्गज	–	धुरंधर, बहुत नीक

रूपसँ केओ सुन्दर नहि होइत अछि, गुणसँ लोक सुन्दर होइत अछि ।

●

3

दोहा

शिक्षा शब्दक अर्थ थिक, सीखब उत्तम ज्ञान ।
निज धर्मक पालन सदा, पर उपकारक ध्यान ।।

बस केवल इसकूलमे, रटनहिँ बीस किताब ।
नहि पबैत छथि लोक किछु, पाबथि फूसि खिताब ।।

लै अछि मकड़ा सूतसँ, सुन्दर जाल बनाय ।
निज निर्वाहक हेतु ई, कतए पढ़ै अछि जाय ।।

चोंचा पक्षी तार पर, खोंता लैछ लगाय ।
एहन विलच्छन लूड़ि ओ, कतए सिखौ अछि जाय ।।

हंस जाहि विधि नीरसँ, क्षीर करैछ बहार ।
ग्रहण करथि गुन जगतसँ, बुधजन ताहि प्रकार ।।

माछ अगम जलसँ पकड़ि, बगुला दैछ सिखाय ।
होय अलभ्यो लाभ से, जतय लागि मन जाय ।।
जहिसँ यश हो जगतमे, सकल जीव पर नेह ।
एहि विधि शिक्षित होइ तँ, सफल मनुष्यक देह ।।

– कविवर सीताराम झा

प्रश्न ओ अभ्यास

पाठमे

(क) निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर लिखू :-

1. शिक्षा शब्दक की अर्थ थिक ?
2. बुद्धिमान व्यक्ति गुण कोना ग्रहण करैत अछि ?
3. शिक्षा केहन होयबाक चाही ?
4. की शिक्षा केवल स्कूलक किताबे पढ़लासँ भेटैत छैक ?

(ख) एहि अर्थकेँ प्रकट करय बला दोहा लिखू :-

1. एहन शिक्षा प्राप्त करबाक चाही, जाहिसँ ई मनुष्यक देह सफल भय जाय ।
2. ध्यानपूर्वक काज कयलासँ असम्भवो काज पूरा भय जाइत छैक ।
3. चोचा पक्षी खोंता बनायब कतय सिखलक ?

(ग) खाली स्थानकेँ भरू ।

1. शिक्षा शब्दक अर्थ थिक, ... ।
   ....., खोंता लैछ लगाय ।।
2. हंस जाहि विधि नीरसँ, ... ।
   ....., जतय लागि मन जाय ।।

भाषा अध्ययन

(घ) एहि पाठमेसँ कोनो चारिटा दोहाक अभ्यास कय अपन वर्गमे सुनाउ ।

(ङ) तुक बैसाउ ।

मकड़	-	फकड़,	ककरा,	जकरा,	तकरा,
सीखब	-	---	---	---	---

नीर	-	---	---	---	---
जन	-	---	---	---	---
उपकार	-	---	---	---	---
जाल	-	---	---	---	---

(च) एहि शब्द सभसँ वाक्य बनाउ -

उपकार, जाल, पक्षी, माछ, मनुष्य

(छ) एहि शब्दक उनटा अर्थ बला शब्द लिखू -

धर्म -	ज्ञान -
यश -	सफल -
लाभ -	शिक्षा -

पाठसँ आगू

(झ) 1. पास- पड़ोस, बूढ़-पुरान, पत्र-पत्रिका, शिक्षक आदिक सहायतासँ नीचा लिखल कविक जानकारी प्राप्त करू ।

(i) विद्यापति

(ii) सुरेन्द्र झा 'सुमन'

2. पाठमे देल गेल दोहासँ मिलैत-जुलैत आनो दोहा सभकेँ जमा करू ।

शब्दार्थ

उत्तम	-	नीक
फूसि	-	झूठ

खिताब	–	उपाधि
नीर	–	जल
बुधजन	–	बुद्धिमान व्यक्ति
अगाम	–	अथाह
अलभ्य	–	जे प्राप्त नहि हो ।
सकल	–	सबटा, सम्पूर्ण

●

4

पर्यावरण-प्रदूषण

पृथ्वी पर जीवन अछि । जीवन लेल माटि, पानि आ हवा आवश्यक छैक जकरा पर्यावरण कहल जाइत छैक । आकाश, भूमि आ जलमे निवास करयबला छोट- नमहर जीव-जन्तु, पशु-पक्षी, कीट-पतंग, जीवाणु-विषाणु, गाछ-वृक्ष आ लता-वनस्पति -सब पर्यावरणक हिस्सा थिक ।

हमरालोकनिक रहन-सहन, आहार-विहार, आचार-विचार आ सामाजिक-मान्यता पर्यावरणक सुरक्षासँ जुड़ल अछि । हमर मान्यता अछि- पोखरि, नदी आ समुद्रक तट पर गाम बसायब, भूमि आ नदीकेँ माय समान बूझब आ ओकरा स्वच्छ आ पवित्र राखब, गाममे गाछी आ फुलवाड़ी लगायब, गाममे पीपरक गाछ रोपब, छाया हेतु बाटक कातमे बड़क गाछ लगायब, तुलसीकेँ आङनमे रोपब आ ओकरा जल देब । हमर आचार-विचार रहल अछि - बथान पर गाय, महींस, बड़द, बकरी आदि पोसब आ ओकर गोबरसँ खाद बनाय खेतमे उपयोग करब, घर-आङनकेँ गायक गोबरसँ नीपब, कुकुर- बिलाड़ि आ सूगा- मैनाकेँ पोसब, नाग-पूजा करब, हरियर-गाछकेँ नै काटब आदि । भगवान बुद्ध कहने छथि- ''प्रकृतिक पोषण करू, दोहन नहि!'' सब जीव-जन्तु पर दया करब, गाछ-वृक्षक रक्षा करब, इनार-पोखरि खुनायब आ ओकर जलकेँ साफ-स्वच्छ राखब हमर धर्म छल । एकर पालन प्रत्येक मनुष्य निश्चित रूपसँ करैत छल । एहीमे पर्यावरणकेँ शुद्ध आ प्रदूषणमुक्त रखबाक रहस्य नुकायल छलैक। एकरा वैज्ञानिको मानैत छथि। वैज्ञानिकक कहब छनि - गाछ-वृक्षक दुनियाँमे पीपरक पात सबसँ बेसी ऑक्सीजन छोड़ैत छैक । एहि तरहेँ जीव-जन्तु हेतु ऑक्सीजनक बड़का स्रोत भेल पीपरक गाछ । तेँ ओ देवता समान ! एकर एक्कोटा पात तोड़ब पाप थिक । एकरा गाममे स्थापित कय हम स्वास्थ्य-लाभ एवं पर्यावरणक सुरक्षा करैत छी।

पर्यावरणक सम्बन्धमे एकटा रोचक घटना सुनू। चालीस साल पूर्व केरल राज्य सरकार अपन राज्यसँ बेंगक निर्यात शुरू कयलक, किएक तँ बेंगक उपद्रवसँ धानक फसिलकेँ बचाओल जा सकय आ सरकारकेँ आमदनियो होअय। देखल गेल जे किछुए सालमे कीट-पतंगक संख्या एतेक बढ़ि गेल जे धानक फसिल नष्ट होअय लागल। ई कीड़ा धानक दाना अयबासँ पहिनहिये ओकर दूध चाटि जाइत छल। अकालक स्थिति बनि गेल। अन्तमे वैज्ञानिकक सलाह पर बेंगक निर्यात रोकि देल गेल।

पृथ्वी पर समस्त जीवक संख्या आ अनुपात निश्चित अछि, जाहिसँ प्रकृतिक संतुलन बनल रहय। एहि अनुपातमे परिवर्त्तन भेलासँ पर्यावरण असुरक्षित भय जायत। साप बेंगकेँ खाइत अछि, बेंग कीट-पतंगकेँ आ बिज्जी साँपकेँ - पर्यावरण-संतुलनक ई अद्‌भुत उदाहरण अछि। हमरा फसिलक रक्षामे एही प्रणालीक सहयोग होइछ। नाग प्रदूषित वायुकेँ शुद्ध करैत अछि। ओ मूसक बीहड़िमे पैसि मूसकेँ मारैत अछि आ मूससँ खेतमे लागल फसिलक रक्षा करैत अछि। तँ नागक महत्त्वकेँ ध्यानमे राखि हमरालोकनि नाग-पञ्चमी मनबैत छी। परन्तु आइ मनुक्ख ई सब किछु बिसरि गेल अछि। अपन सुख-सुविधा आ विकासक लेल ओ प्राकृतिक-संसाधनक भयंकर दोहन कय रहल अछि। भूमि, जल आ वायु लगातार प्रदूषित भय रहल अछि। पृथ्वीक तापमान बढ़ि रहल अछि। समुद्रक जलस्तर ऊपर उठि रहल अछि। जँ एहने स्थिति रहत तँ अनेको देश समुद्रमे डूबि जायत। जेना-जेना जनसंख्या बढ़ि रहल अछि तहिना-तहिना ओकर आवश्यकता सेहो। कल-कारखानासँ नदीक जल आ वायुमण्डल प्रदूषित भय रहल अछि। बान्ह, कारखाना आ मकान बनयबा लेल जंगल कटि रहल अछि। रासायनिक खादक प्रयोगसँ खेतक उर्वराशक्ति घटि रहल अछि। पेयजलक संकट अछि। कीड़ा-मकोड़ा, मच्छर, रोग-ब्याधिक प्रकोप बढ़ले जा रहल अछि। सौंसे धरती आ जीव-जन्तुक अस्तित्व संकटमे अछि। अपन धरतीकेँ स्वच्छ आ प्रकृतिकेँ संतुलित रखबा लय हमरालोकनिकेँ मिलि कय सोचय पड़त।

तँ आउ, हमरालोकनि निश्चय करी जे पर्यावरणक सुरक्षाक लेल हमसभ तन-मनसँ प्रयास करब। पर्यावरण सँ जुड़ल अपन सामाजिक मान्यताक पालन करब।

धीरेन्द्र कुमार झा

प्रश्न ओ अभ्यास

पाठमे

(क) एहि प्रश्नक उत्तर दिअ -

1. पर्यावरण ककरा कहल जाइत छैक ?
2. भगवान बुद्ध की कहने छथि ?
3. हमर धर्म की सभ छल ?
4. गाछ-वृक्षक दुनियाँमे सबसँ बेसी ऑक्सीजन कोन वृक्ष छोड़ैत अछि ?
5. पीपरक गाछकेँ की मानल गेल अछि ?
6. नाग-पञ्चमी किएक मनाओल जाइत अछि,
7. नदीक जल आ वायुमण्डल कथीसँ प्रदूषित भय रहल अछि ?
8. खेतक उर्वराशक्ति कथीसँ कम भय रहल अछि ?
9. प्रकृतिकेँ संतुलित रखबाक लेल हमरासभकेँ की करबाक चाही ?

(ख) खाली स्थानकेँ भरू ।

1. पृथ्वी पर समस्त जीवक संख्या आ अनुपात निश्चित अछि जाहिसँ प्रकृतिक .... बनल रहय ।
2. साँप ..... केँ खाइत अछि, बेंग ..... केँ आ बिज्जी ..... केँ, पर्यावरण-संतुलनक ई ..... उदाहरण अछि ।
3. कल-कारखानासँ ..... जल आ वायुमण्डल ..... भय रहल अछि ।
4. सौंसे धरती आ जीव-जन्तुक अस्तित्व ..... मे अछि ।
5. पर्यावरणक सुरक्षाक लेल हमसभ .....सँ प्रयास करब ।

(ग) कहू ! एहिमे की सत्य छैक ?

1. तुलसीकेँ आङनमे रोपब आ ओकरा जल देब ।
2. हरियर गाछकेँ काटि जारनिमे उपयोग करब ।
3. इनार-पोखरिक जलकेँ स्वच्छ राखब ।
4. केरल राज्यमे बेंग घटलासँ धानक उपजा बढ़ि गेलैक ।
5. पृथ्वीक तापमान बढ़लासँ समुद्रक जलस्तर ऊपर उठि रहल अछि ।

(घ) अनुमान करू -

1. जँ गाछ-वृक्ष सभ कटि जायत तँ की सभ हेतैक ?
2. जँ पृथ्वी पर साँप नहि रहत तँ की सब हेतैक ?
3. जँ अहाँक घरक अगल-बगल केओ गंदगी पसारय तँ अहाँ की करब ?

भाषा-अध्ययन

(ङ) 1. पाठमे ओ शब्दसभ जे (-) चिह्न से जुड़ल अछि, तकरा ताकि कय लिखू । जेना-

माटि-पानि, जीव-जन्तु, ...

2. पाठमे आयल संज्ञा (व्यक्ति/वस्तुक नाम) शब्दकेँ ताकि कय निम्न रूपेँ दू भागमे बाँटू

संज्ञा शब्द

सजीव (जकरा मे जीवन हो)	निर्जीव (जकरामे जीवन नहि हो)
पशु	भूमि
पक्षी	पोखरि
---	---
---	---

3. **पाठमे आयल संज्ञा-शब्दक लिङ्ग लिखू -**

पुलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसक लिङ्ग
कुक्कुर	गाय	गाछ
---	---	---
---	---	---

पाठसँ आगू

(च) 1. स्वास्थ्यक रक्षाक लेल हमरा लोकनिकेँ कोन-कोन गाछ रोपबाक चाही ?

2. अहाँक विद्यालयमे आ ओकर चारू-कात गंदगी पसरल छैक ।

- एकर सफाइ हेतु एकटा योजना बनाउ ।
- एहि कार्यमे अहाँक कोन-कोन मित्र रहताह आ के कोन कार्य करताह तकर सूची बनाउ ।

3. **पर्यावरणसँ सम्बन्धित आन लेख सबकेँ ताकू आ पढ़ू ।**

4. **पर्यावरणसँ सम्बन्धित कोनो रोचक घटनाक पता करू आ ओकरा वर्गमे सुनाउ ।**

शब्दार्थ

जीवाणु	–	सूक्ष्म जीव, एहन जीव जे आँखिसँ नहि देखल जा सकय ।
कीट	–	कीड़ा
पतंग	–	फतिंगा
लता	–	लत्ती
मान्यता	–	विचार
प्रदूषण	–	गंदगी
स्वच्छ	–	साफ

पोषण	–	जीवन हेतु आवश्यक वस्तुक अर्थमे ।
दोहन	–	दूहब, प्राप्त करब ।
निर्यात	–	वस्तुकेँ बाहर पठायब ।
प्रणाली	–	विधि
संसाधन	–	सामग्री, उपयोगक वस्तु ।
व्याधि	–	रोग, बीमारी

प्रकृतिक पोषण करू, दोहन नहि ! -बुद्ध

●

अतिरिक्त पाठ

5

एकबुद्धि बेङ

एकटा रहय पोखरि । ओहिये माछ सह-सह करैत रहैक । बहुत अथाह रहलाक कारणेँ पोखरिक जल जन्तु निचैनसँ ओहिमे रहय । ओहिमेसँ शतबुद्धि आ सहस्रबुद्धि नामक माछ ओ एकबुद्धि नामक बेङमे गाढ़ दोस्ती रहैक । तीनू रोज साँझकेँ पोखरिक कछेर पर बैसि किछु काल गप्प-सप्प करय आ अन्हार भेलापर पानि मे पैसि जाय ।

एहि तरहेँ बहुत दिन बितलापर एक दिन मलाहक एक हेंज हाथमे जाल लेने माथ पर बड़का-बड़का मारल माछक भरिगर मोटा उठौने सूर्यास्तक घड़ी ओहि पोखरिक घाट लग पहुँचल । ओहि पोखरिक चुहचुही देखि ओ सभ अपनामे विचार कयलक- "अरे ! ई पोखरि तँ माछसँ भरल अछि आ पानियो थोड़बे छैक । तँ काल्हि भोरे हमरालोकनि एतहि मछहरि करब। एखन चलै चल ।" रंगमे भंग भय गेल । माछ सबहक पिल्ही चटकल । सबहिक ठोर पर फुफड़ी पड़य लागल । सब माथ पर हाथ धयने मारल जयबाक चिन्तासँ अपस्याँत भय गेल । लगले सभा भेल । बेङ बाजल-"यौ शतबुद्धि ! की अहाँ मलाहक गप्प सुनलहुँ ? की विचार होइत अछि- रहबाक अथवा पड़यबाक ? जे करबाक हो से एखनहि बाजू । समय नहि अछि ।

अपन प्रिय मित्रक पेटमे हलदिल्ली पैसल देखि सहस्रबुद्धि ठहाका लगबैत जबाब देलक- "यौ यार ! जुनि डेराउ । ओकरा लोकनिक गप्पे पर उड़ब आ भागब उचित नहि अछि । डरयबाक कोनो बात नहि । पहिने तँ ओ सब अएबे ने करत आ जँ आबिए गेल तँ हम अपन बुद्धिक द्वारा अपना संग अहूँकेँ बचा लेब । पानिमे नुकयबाक हम अनेको कला जनैत छी । तेँ चिन्ता कोन ?"

सहस्रबुद्धिक एहन हौसला देखि शतबुद्धि टिपलक –"औ मित्र ! अहाँ ठीक बुझलहुँ । तेँने लोक अहाँकेँ सहस्रबुद्धि कहैत अछि । बुद्धिमानक बुद्धिक कारणेँ संसारमे किछु असम्भव नहि छैक । तेँ खाली मलाहक बोल पर अपन बाप-दादाक डीहकेँ छोड़ब उचित नहि । तेँ कोनो हालतिमे पीठ नहि देखायब । हमहूँ अहाँकेँ अपन बुद्धिसँ बचा लेबे करब ।" एकबुद्धि बेङ बाजल- "हे यौ महान बुद्धि ! हमरा तँ एकहिटा बुद्धि अछि, जे कहैए पड़ा जो । तेँ हम आइए अपन पत्नी संग दोसर पोखरि चलि जायब ।" ई कहि ओ बेङ रातिएमे लंक लेलक आ दोसर पोखरिमे शरण लेलक ।

मलाहसभ भोरे-भोर जूमि ओहि पोखरिकेँ मछहर कय निमच्छ बना देलकै । माछक संग काछु, बेङ, काँकोड़ आदि सभ जल-जन्तु पकड़ल गेल । बड़ी काल धरि कलाबाजी देखौलाक बाद अंतमे शतबुद्धि आ सहस्रबुद्धि बाले-बच्चे जालमे बाझि मारल गेल । मछहरसँ निचैन भय मछवाहसभ खुशीसँ झूमैत अपन घर विदा भेल । भारीभरकम शतबुद्धिकेँ एकगोटे माथपर चढ़ौलक । दोसर गोटे नमगर होयबाक कारणे सहस्रबुद्धिकेँ टाङि विदा भेल । पोखरिक मोहार पर मौजसँ बैसल बेङ शतबुद्धि सहस्रबुद्धिकेँ टाङल लय जाइत देखि बड़ दुखी भेल आ मनेमन सोचय लागल- "ठीके ! बेसी बुद्धि बलाय होइत छैक । बेसी काबिल हजार ठाम मखैत अछि । जँ हमर दूनू मित्र हमरे जकाँ एक-बुद्धि पर रहि सोचि-विचारि कय काज करैत तँ आइ ई दशा नहि होइतैक ।

– देवकान्त झा

●

6

हम छी भारतवासी

एक पिता केर एहि दुनिआ मे
कोटि कोटि संतान।
अंग शरीरक रक्तक लाली
सबकेँ देल समान॥

किछुकेँ मानी अपन समाजक
किछुकेँ मानी अन्य।
एहन विभेद भरल मानव केँ
कोना कहत केओ धन्य॥

हम सब अपने अहंकार मे
रही चूर चिकरैत।
अपन बन्धुकेँ अदना कहि कहि
नित अपमान करैत॥

कोना कहायब भारत-सन्तति
जँ विचारमे फूट।

कोना एक रहि सकब रहय यदि
अपनहि सबमे टूट ।।
भेद-भाव सब बिसरि बनी हम
एकताक विश्वासी ।
बूझी भारत भूमि हमर थिक
हम सब भारतवासी ।।

– प्रभुनारायण झा 'प्रदीप'

पाठमे

प्रश्न ओ अभ्यास

(क) निम्न प्रश्नक उत्तर लिखू -

1. एक पिताक संतानमे की सब एक रंग होइत छैक ?
2. हमरा सबकेँ की सब करबाक चाही ?
3. हमरा सबकेँ की सब नै करबाक चाही ?
4. हमरालोकनि कोन देशक वासी छी ?
5. एहि कवितासँ की संदेश भेटैत अछि ?

(ख) एहि पाँतीकेँ पूरा करू :-

भेद-भाव सब बिसरि ..... विश्वासी ।
..... हमर थिक, हम सब ..... ।।

(ग) एक अर्थक दुनू शब्दक मिलान करू :-

1.	अन्य	संतान
2.	विभेद	घमंड
3.	अहंकार	भाइ
4.	बन्धु	अन्तर
5.	सन्तति	दोसर

(घ) तुक बैसाउ

जेना- पढ़ब - लिखब, गुनब, देखब, सुनब,

मानब -

कहत -

चिकरैत -

फूट -

(ङ) भाषा-अध्ययन

1. एहि पाठ सँ **संज्ञा** शब्द चुनि कय लिखू -

2. एहि पाठ सँ **ईकारान्त** एवं **ऊकारान्त** शब्दकेँ चुनि कय लिखू :-

   जेना- **ईकारान्त** - लाली ----------

   ऊकारान्त - चूर ----------

3. एहि पाठमे एहन शब्द जकर अन्तमे '**आ**' उच्चारण होइत हो तकरा सबकेँ लिखू-

   जेना - **पिता** -------

पाठसँ आगू :

(च) 1. एकटा पैघ कागज पर भारतक मानचित्र बनाय ओकरा रङि वर्ग-कक्षमे टाँगू।

2. भारतक कोनो पाँचटा राज्यक राजधानी लीखि वर्ग-कक्षमे टाँगू ।

भारत

क्र० सं०	राज्य	राजधानी
01	बिहार	पटना
02	.....	.....
03	.....	.....
04	.....	.....
05	.....	.....
.....	.....	.....

3. **एहि कविता पर अपन शिक्षकक सहयोगसँ समूह-नृत्य तैयार कय विद्यालयक सांस्कृतिक कार्यक्रममे प्रस्तुत करू ।**

4. **की अहाँकेँ एहि तरहक कोनो आन कविताक संबंधमे जानकारी अछि ? यदि नहि, तेँ पत्र-पत्रिका आदिसँ ताकि शुद्ध आ सुन्दर आकार मे उतारि ओकरा संकलित करू । एहि कार्यमे अपन शिक्षकसँ सहयोग लिअ ।**

शब्दार्थ

अंग	–	शरीरक हिस्सा
अन्य	–	दोसर
विभेद	–	अंतर
अहंकार	–	घमंड
बन्धु	–	भाइ
अदना	–	आन
सन्तति	–	संतान

●

7

जूड़- शीतल

मनुष्यक जीवनमे पावनि-तिहारक विशेष महत्त्व अछि । संसारक कोन-कोनमे सभ वर्गक लोकमे पावनि-तिहार मनाओल जाइत अछि । हिन्दूमे फगुआ, दशमी होइत अछि तँ मुसलमानमे ईद, मोहर्रम, ईसाईमे क्रिसमस तँ आदिवासीमे सरहुल आदि । मिथिलामे सेहो अनेक पावनि- तिहार होइत अछि, जाहिमे एक प्रमुख थिक - 'जूड़-शीतल'।

ई पावनि चैतक संक्रान्ति दिन आ ओकर प्रात मनाओल जाइत अछि । मिथिलामे दू गोट संक्रान्ति बड़ प्रशस्त अछि । एक पूसक संक्रान्ति, जकरा मकर संक्रान्ति अथवा तिला संक्रान्ति कहल जाइत अछि । दोसर अछि चैतक संक्रान्ति, जकरा मेष संक्रान्ति कहल जाइत अछि । मेषे संक्रान्ति दिन जूड़-शीतल पावनि होइत अछि । ई पावनि दू दिन होइत अछि । पहिल दिन सतुआइन तथा दोसर दिन धुड़खेड़ि होइत अछि । सतुआइन दिन लोक सातु आ सजलघट, अपन पितरक निमित्त दान करैत अछि । एहि दिन सर्वप्रथम लोकसभ अपन घर मे सातु-गुड़ खाइत अछि, तकरा बादे बड़ी-भात आदि भोजन करैत अछि । भोरे-भोर नेनासभ आमक गाछी दौड़ैत अछि आ आमक टिकुला बीछि कय अनैत अछि । एहिदिन बड़ीमे किरतिम कय आमक टिकुला पड़ैत अछि । नव आमक संयोग पाबि जूड़-शीतल केर बड़ी-भात बड़ नामी होइत अछि । एहि दिन आमक चटनी बनबे टा करय । लोक अनको भोजन करबैत अछि । रातिमे सभक घरमे अरबा-चाउरक भात ओ बड़ी बनैत अछि । अरबा-चाउरक भातमे पानि मिला कय राखि देल जाइत अछि, जाहिसँ प्रात भेने ओ भात अरुआ नहि जाय ।

प्रातः काल घरक जेठ-जन सभ अपनासँ छोटकँ जलसँ जुड़बैत छथि, संगहि गाछ-वृक्षकँ सेहो जुड़बैत छथि । तकरा बाद अपन-अपन आङनकेँ बहाड़ि-सोहारि कय नीपल जाइत अछि।

स्त्रीगण पातड़िक ओरिआओनमे लागि जाइत छथि आ नेनासभ भोरेसँ घर-आङनमे अनघोल कयने रहैत अछि । जूड़- शीतलमे धुड़खेड़ि होइत अछि। बच्चा सभ एक दोसराक देह पर माटि-पानि तोपि आनन्दक अनुभव करैत अछि । आबाल-वृद्ध, नर-नारी देह पर पानि पड़यबामे संकोच नहि करैत अछि । केओ ककरो दुत्कारैत नहि अछि, फटकारैत नहि अछि, अपितु थाल-पानि पड़ाय आनन्दक अनुभव करैत अछि । कोनो-कोनो व्यक्ति खिसियाह स्वभावक होइत छथि, हुनकातँ अरवधि कय केओ माटि पानि दय दैत छनि आ ओ तामसे माहुर भय जाइत छथि । मुदा हुनक तामस पर नेना-भुटकाक झुण्ड थपड़ी पाड़ि ठहक्का मारैत अछि । एकदिस जँ ओ नेना-लोकनिक आचरण पर दाँत किचैत छथि तँ दोसर दिस बालसेना विहुँसैत रहैत अछि । दिन चढ़ैत धरि गामक नेना, युवक, बूढ़ सभ एक दोसराकेँ पानि पड़ाय जुड़बैत अछि । तत्पश्चात् लेढ़ायले देहे गामक पोखरिमे चुभकैत रहैत अछि । मोन भरि चुभकितो अछि तथा पुरैनिक पात सेहो तोड़ैत अछि । पूरैनिक पातक संग घर घुरैत अछि। घर आबि पुरैनिक पात पर बासि भात ओ बड़ी, खीर आदि सब गोटे संगे खाय अपूर्व आनन्दक अनुभव करैत छथि। गामक युवकलोकनि आमक गाछीमे अखाड़ाक निकट एकत्र होइत छथि । जतय कुस्तीक आयोजन होइत छैक । सभ अपन-अपन जोड़ी ताकि शक्तिक अजमाइस करैत छथि ।

एहि दिन चारू कात आनन्द पसरि जाइत छैक आ तेँ मिथिलाक बच्चा-बच्चा एकर उत्सुकतासँ प्रतीक्षा करैत अछि ।

- लेखनाथ मिश्र

प्रश्न ओ अभ्यास

पाठमे

(क) एहि प्रश्नक उत्तर दिअ ।

1. जूड़-शीतल पावनि कहिआ मनाओल जाइत अछि ?
2. जूड-शीतल कय दिन मनाओल जाइत अछि ?

3. एहि दिन लोक ककरा आ कथीसँ जुड़बैत अछि ?
4. एहि दिन लोक की सब खाइत अछि ?
5. एहि दिन लोक कोना आनन्दक अनुभव करैत छथि ?

(ख) खाली स्थानकेँ भरू ।

1. नव आमक संयोग पाबि ..... केर बड़ी भात बड़ नामी होइत अछि ।
2. घरक जेठ जन सभ अपनासँ छोटकेँ जुड़बैत छथि संगहि ..... केँ सेहो जुड़बैत छथि।
3. केओ ककरो दुत्कारैत नहि अछि, ... नहि अछि ।
4. युवकलोकनि आमक गाछीमे ..... निकट एकत्र होइत छथि ।
5. मिथिलाक बच्चा-बच्चा एकर ..... प्रतीक्षा करैत अछि ।

भाषा-अध्ययन

(ग) शब्दकेँ जोड़ू आ लिखू ।

1.	पावनि	(i)	सोहाड़ि
2.	मेष	(ii)	चाउर
3.	अरबा	(iii)	संक्रान्ति
4.	बहाड़ि	(iv)	पानि
5.	थाल	(v)	तिहार
6.	बड़ी	(vi)	वृक्ष
7.	गाछ	(vii)	भात

पावनि – तिहार, ..., ..., ..., ..., ..., ...

(घ) एहि शब्द सभक पहिल अक्षर हटा कय नव शब्द लिखू आ ओकर अर्थ लिखू।

		शब्द	अर्थ
1.	**जीवन** –	वन	जंगल
2.	**शीतल**–	.....	.....
3.	**मकर** –	.....	.....
4.	**भोजन**–	.....	.....
5.	**संयोग** –	.....	.....
6.	**आचरण**–	.....	.....

(ङ) 1. प्रस्तुत पाठसँ पाँचटा संज्ञा शब्द (एहन शब्द जे कोनो व्यक्ति, वस्तु, जीव अथवा स्थानक नाम हो) कें चुनू आ ओहिसँ वाक्य बनाउ । जेना,

मनुष्य – हमरालोकनि मनुष्य छी ।

..... – .....

..... – .....

..... – .....

..... – .....

..... – .....

2. अपन पाठसँ सर्वनाम शब्दक (एहन शब्द सभ जकर प्रयोग संज्ञा शब्दक बदलामे होइत छैक) सूची बनाउ । जेना,

जाहि, ई, ..., ..., ..., ..., ..., ..., ...

पाठसँ आगू

(च) 1. अहाँ अपन परिवार, मित्र, टोल-पड़ोस आ शिक्षक लोकनिसँ आन-आन पावनि- तिहारक जानकारी लय ओकर सूची बनाउ ।

2. हालेमे जे पावनि अहाँक घरमे मनाओल गेल छल, तकरा विषयमे लिखू जे ओहिमे की सब भेल ?

शब्दार्थ

माहुर भय जायब	–	तमसा जायब
किरतिम कय	–	निश्चित रूपसँ
धुरखेड़ि	–	गर्दा- माटिसँ खेलायब
अरवधि कय	–	जानि बूझि कय

मनुष्यक जीवनमे पावनि तिहारक विशेष स्थान छैक ।

●

8

नचनी नाच नचौलक बाढ़ि

घर-आङन हिलकोरक बाढ़ि,

आँखि - आँखिमे नोरक बाढ़ि,

एहन विपत्तिक समय ताहि पर

चौदिस चसकल चोरक बाढ़ि ।

गाम - गाममे शोकक बाढ़ि,

नगर - नगरमे लोकक बाढ़ि,

ऊँटक मुँहमे जीरक फोड़न,

तकरो उपरे लोकक बाढ़ि ।

बान्ह-सड़क पर सुटकल जनकेँ,

पछबासँ सटसटबय बाढ़ि,

सबकेँ काँचे चिबा जाइ लै,

अपन दाँत कटकटबय बाढ़ि ।

कोठा सोफा धरिक द्वारकेँ,

भेल निडर खटखटबय बाढ़ि,

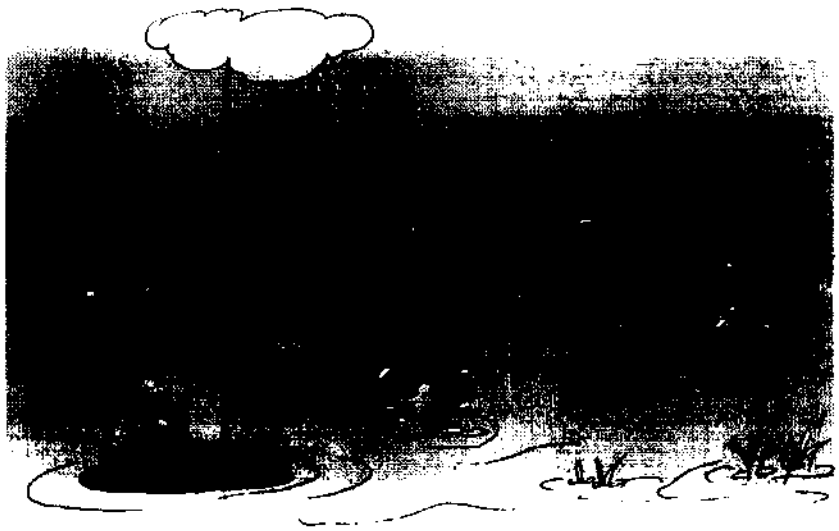

भिनसर - साँझक क्रियाकर्मकेँ,

भय निधोख लटपटबय बाढ़ि ।

जे जत्तहि छल तकरा तत्तहि,

बीच बाट अटकौलक बाढ़ि,

वस्तु अछैत, उपास करा कय,

कते धोधि सटकौलक बाढ़ि ।

फूसक घर की, केहन-केहन,

महलोकेँ गीड़ि पचौलक बाढ़ि,

छोटकासँ बड़का धरि सबकेँ,

नचनी नाच नचौलक बाढ़ि ।

- चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

प्रश्न ओ अभ्यास

पाठसँ

(क) एहि पाठक आधार पर नीचा लिखल प्रश्नक उत्तर दिअ ।

1. बाढ़ि ककरा कहैत छैक ?
2. बाढ़ि अयला पर लोक कतय टिकैत अछि ?
3. बाढ़ि अयला पर लोकक दशा केहन भय जाइत छैक ?
4. बाढ़ि ककरा नचनी नाच नचबैत अछि ?

(ख) खाली स्थान केँ भरू ।

1. गाम- गाममे शोकक बाढ़ि;
   ..... ।
2. .....
   अपन दाँत कटकटबय बाढ़ि ।
3. फूसक घर की केहन-केहन
   ..... ।

(ग) एहि पाँतीक अर्थ लिखू ।

1. सबकेँ काँचे चिबा जाइ लै
   अपन दाँत कटकटबय बाढ़ि ।

   .....

   .....

2. फूसक घर की, केहन- केहन
   महलोकेँ गीड़ि पचोलक बाढ़ि ।

.....

.....

(घ) पाठक आधार पर कहू - की सत्य अछि ।

1. बाढ़ि अयला पर लोक आनंदित होइत अछि ।
2. ऊँटक मुँहमे मेथीक फोड़न ।
3. बाढ़िमे वस्तु अछैते लोककेँ उपास पड़ि जाइत छैक ।
4. बाढ़िमे फूसक घर की, महलो सब भासि जाइत छैक ।

भाषा-अध्ययन

(ङ) 1. एहि शब्दसँ वाक्य बनाउ :-

समय, विपत्ति, निडर, उपास, महल

2. जाहि शब्दसँ कार्य करबाक बोध हो, तकरा क्रिया कहल जाइत छैक । एहि पाठसँ क्रिया-शब्द केँ ताकू । जेना,

चसकल, ..., ..., ..., ..., ..., ...

पाठसँ आगू

(च) 1. सोचू आ कहू ।

- जँ बाढ़ि अयबाक खबरि अहाँकेँ भेटय तँ सबसँ पहिने अहाँ की सब करब ?
- बाढ़ि अयलाक बाद अहाँ की सब सावधानी करब ।
- बाढ़िये सनक आन कोन-कोन संकट हमरा सब पर अबैत अछि ?

2. अहाँक नजरिमे सबसँ भयंकर बाढ़ि कतय आ कहिया आयल ?

3. की अहाँ बाढ़ि देखने छी ? यदि हँ, तँ ओकर विवरण वर्गमे सुनाउ ।

शब्दार्थ

हिलकोर	– लहरि
चसकब	– कोनो गलत काजकेँ बेर-बेर करब, परिकब ।
ऊँटक मुँह मे जीड़क फोड़न	– आवश्यकतासँ बहुत कम होयब ।
निधोख	– बिना डरकेँ ।
धोधि	– चरबीसँ मोट भेल नमरल पेट ।
नचनी नाच नचायब	– बहुत तंग करब ।

●

9

दुष्ट खिखिर

कोनो जंगलमे एकटा खिखिर रहैत छल । एक दिन ओहि खिखिरकेँ बड़ जोर भूख लगलैक, ओ सौँसे जंगल छानि मारलक मुदा कतहु खयबाक हेतु किछु नहि भेटलैक । भुक्खे लहालोट भय गेल । तखन बाध्य भय जंगल लगक एकटा गाम दिस बिदा भेल ।

गामक एकटा घरक पछुआड़मे एकटा मुर्गा चराउर करैत छल । खिखिर ओहि मुर्गाकेँ देखि खूब प्रसन्न भेल आ सोचय लागल - "किएक ने एकरे मारि अपन प्राण-रक्षा करी ।"

ओ मुर्गा लग पहुँचल आ ओकरा झपटि, कंठ मचोड़ि खूब आनन्दसँ ओकर मासु खयलक। दुर्भाग्यसँ ओकरा कंठ मे मुर्गाक एकटा सहरी गथा गेलैक । अनेक प्रयास कैलाक बादो सहरी निकलबे नहि कयलैक । दर्द सँ छटपटाइत-छटपटाइत खिखिर बेहोस भय गेल । किछु कालक बाद जखन ओकरा होस अयलैक तँ चारूकात ताकय लागल । ओ चाहैत छल जे क्यो ओकरा कंठ से सहरी निकालि दैक । मुदा क्यो नहि भेटि रहल छलैक । दर्दे छटपटाइत खिखिर आगू बिदा भेल । किछु दूर गेल तँ ओकरा एकटा सारस चिड़ै भेटलैक । ओ लग जा विनीत भावें बाजल-

"सारस बहीन ! जँ अहाँ हमरा कंठ सँ सहरी निकालि देब तँ हम अहाँकेँ खूब इनाम देब। हे ! हमरा पर कृपा करू । हम बड़ कष्टमे छी । हमरा एहि कष्टसँ अहीं उबारि सकैत छी ।

सारस चिड़ैक लोल बेस लाम होइत छैक । खिखिरक ब्यथा देखि ओ सोचय लागल - की करी, की नहि ! किछु काल सोचि ओ बाजल -

अहाँ मुँह बाउ !

खिखिर मुँह बौलक तँ सारस अपन लोल ओकरा मुँह मे धय बड़ी काल धरि सहरीकेँ हिलबैत-डोलबैत रहल । खिखिरक मुँह सोनितसँ भरि गेलैक ओ दर्दसँ छटपटाइते रहल । होइक जे आब प्राण निकलि जायत .....!

दर्द सहाजसँ बेसी होइत रहबाक कारणे खिखिर भूमिमे मुँह रगड़य लागल । क्रमशः खिखिर बेहोस भय गेल । जखन होस अयलैक तँ सारस केँ नेहोरा करैत कहलकैक-

"सारस बहिन ! अहाँ एकबेर आओर प्रयास करू! हमर प्राण अवग्रहमे अछि । आब हमर प्राण नहि बाँचत ।"

सारसकेँ दया आबि गेलैक ओ पुनः प्रयास करय लागल । अपन लोलसँ सहरीकेँ चुट्टा जकाँ पकड़ि फेर हिलौलक डोलौलक । थोड़बे परिश्रम कयलाक उपरांत खिखिरक कंठ सँ सहरी निकालबामे सफल भय गेल ।

खिखिरकेँ हक दय प्राण अयलैक । ओ कष्टसँ मुक्त भय गेल छल । आँखिमे प्रसन्नताक ज्योति स्पष्ट झलकि रहल छलैक । मुँहक उदासी पहिनहि खतम भय गेल छलैक । ओ जंगल दिस बिदा होयबाक हेतु उद्यत भेल । खिखिरकेँ पड़यबाक स्थिति देखि सारस बाजल- हे यै खिखिर ! आ हमर इनाम तँ देने जाउ ।

खिखिर कहलकैक- की कहल ! इनाम ! इनाम तँ अहाँकेँ दय देलहुँ ।

खिखिरक एहि प्रत्युत्तर पर सारसकेँ आश्चर्य भेलैक ! ओ पुछलकैक- की कहल ! इनाम दय देलहुँ ! कखन इनाम देलहुँ ?

खिखिर कहलकैक - आहिरे बा ! रे अहाँक एहन सुन्दर, सुकोमल कंठ आ से हमर मुँहक भीतरमे । हम चाहितहुँ तँ कट सँ ओकरा उड़ा सकैत छलहुँ मुदा अपन कृतज्ञताक निर्वाह करैत से नहि कय सकलहुँ । की ! तकरा अहाँ इनाम नहि बुझैत छियैक ?

भयभीत सारस उड़ि पड़ायल । बाटमे ओ सोचैत जा रहल छल -

दुर्जन पर नहि होइ सहाय ।
भाङय पात जाहि पर खाय ।।

- मुरलीधर झा

प्रश्न ओ अभ्यास

पाठमे

(क) एहि प्रश्नक उत्तर लिखू -

1. खिखिरकेँ भूख लगलैक तँ ओ की कयलक ?
2. मुर्गाकेँ खयलाक बाद खिखिरकेँ की भेलैक ?
3. दर्दसँ छटपटाइत खिखिर ककरा लग गेल ?
4. खिखिरक गर्दनिसँ सहरी कोना निकलल ?
5. सारसकेँ इनाममे की भेटलैक ?

(ख) खाली स्थान केँ भरू

1. भुक्खे ..... भय गेल ।
2. दर्दसँ छटपटाइत ..... खिखिर ..... भय गेल ।
3. सारस चिड़ैक लोल बेस ..... होइत छैक ।
4. खिखिरकेँ ..... दय प्राण अयलैक ।
5. ..... सारस उड़ि पड़ायल ।

(ग) एहि पाँती सबकेँ पढ़ू आ सही ✓ एवं गलत ✗ क निशान लगाउ ।

1. खिखिर मुर्गाकेँ देखि बड़ दुखी भेल । ☐
2. खिखिर सारसकेँ डाँटि कय कहलकैक । ☐
3. खिखिरक कष्ट देखि सारसकेँ दया आबि गेलैक । ☐
4. सारस खिखिरक कंठसँ सहरी निकालबामे सफल भय गेल । ☐
5. इनाममे सारसक जान बकसि देबाक बात खिखिर कहलकैक । ☐

(घ) एहि पाँतीक अर्थ लिखू -

''दुर्जन पर नहि होइ सहाय ।
भाङय पात जाहि पर खाय ।।''

(ङ) के कहलक ?

1. ''जँ हमरा कंठसँ सहरी निकालि देब तँ हम अहाँकेँ खूब इनाम देब ।''
2. ''अहाँ मुँह बाउ !''
3. ''आब हमर प्राण नहि बचत ।''
4. ''हमर इनाम तँ देने जाउ ।''
5. ''अहाँक एहन सुन्दर, सुकोमल कंठ आ से हमरा मुँहक भीतर मे । हम चाहितहुँ तँ कटसँ ओकरा उड़ा सकैत छलहुँ ।''

भाषा-अध्ययन

(च) नीचा खाली स्थानमे उपयुक्त शब्द भरू :-

एकवचन (एकटा)		**बहुवचन (बहुत रास)**
हम	हम सब,	हमरा लोकनि
अहाँ	अहाँ सब,	अहाँ लोकनि
तों	.....,	.....
ओ	.....,	.....
ओकरा	.....,	.....
तकरा	.....,	.....
ककरा	.....,	.....
अपने	.....,	.....

पाठसँ आगू-

(छ) 1. नीचा बनाओल खानाकेँ एहि तरहेँ भरू :-

पशुक नाम	जंगली	पालतू	शाकाहारी	मांसाहारी	सर्वभक्षी
कुकुर	✓	✓			✓
बाघ	✓			✓	
.....					
.....					
.....					
.....					
.....					

2. अहाँ जतय जे पक्षी सब देखलहुँ अछि, तकर एकटा सूची बनाउ ।
3. पाठमे देल गेल कथासँ मिलैत- जुलैत अपना मोनसँ एकटा नव कथा लिखू।
4. पुस्तकालय मे 'पंचतन्त्र' क कथा पढ़ू ।

शब्दार्थ

लहालोट – छटपटायब ।

चराउर – पशु-पक्षी द्वारा घूमि-फीरि कय घास-दाना आदि खायब ।

सहरी – हड्डीक टुकड़ा ।

लाम – लम्बा ।

लोल – मुँहक बाहरी नोकगर हिस्सा ।

अवग्रह – संकट, समस्या ।

उद्यत – तैयार ।

कृतज्ञता – उपकारक भावना ।

●

अतिरिक्त पाठ

10

शरीर एक पूजी

एक बेर महात्मा टाल्सटायक ओहिठाम एक युवक आयल । कहय लगलनि "हम बड़ गरीब छी । हाथमे एको पाइ नहि रहि गेल अछि जाहिसँ कोनो रोजगार कय अपन जीवन-निर्वाह कय सकी ।"

महात्मा टाल्सटायकेँ स्पष्ट बुझि पड़लनि जे युवक गरीबीक कारणें जीवनसँ एकदम निराश भय गेल अछि । तेँ एकर दु:ख-कष्ट असह भय गेलैक अछि । पुछलथिन - "अहाँकेँ कोनो पूजी- पगहा नहि रहि गेल अछि ?" "एकदम नहि" - युवकक उत्तरमे एकदम निराशा छलैक। "हम एक एहन व्यापारीकेँ जनैत छिऐक जे मनुष्यक आँखिक व्यापार करैत अछि । एक नहि, दुनू आँखि ओ कीनि लैत छैक । बीस हजार टाका ओ दय सकैत अछि । यदि अहाँ दुनू आँखि बेचि ली तेँ बीस हजार टाकाक पूजी हाथमे आबि जायत । बाजू, मंजूर अछि ?" टाल्सटाय पुछलथिन । "आँखि ? नहि बेचब, आँखि कोना बेचि लेब ?" युवकक उत्तर छलैक । "ओ हाथो कीनि सकैत अछि। दुनू हाथक पन्द्रह हजार भेटि जायत" टाल्सटाय फेर जिज्ञासा कयलथिन। "एहनो होइत छैक ? कहू तेँ, हाथ कोना बेचि लिअ ?" युवक हाथो बेचबाक हेतु तैयार नहि भेल ।" तखन दुनू पयरे बेचि लिअ । दस हजार टाका धरि दय सकैत अछि । बेचि लिअ, गरीबीक दु:ख-कष्टसँ मुक्ति भेटि जायत" टाल्सटाय कहलथिन । युवक घबरा गेल । बाजल, "ई अहाँ की कहि रहल छी ? पयर कोना बेचि लिअ ?" टाल्सटाय कहलथिन, "हम तेँ सत्ये कहलहुँ अछि । यदि अहाँ अधिक धनिक बनय चाहैत छी तेँ अहाँ अपन पूरा शरीर बेचि लिअ। व्यापारी मनुष्यक शरीरसँ कोनो दबाई बनबैत अछि। एक लाख टाका दय देत । बाजू, की विचार अछि?" युवक खिसिया उठल । बाजल- "अहाँ ई की कहि रहलहुँ अछि ? एक लाखक

बाते की, एक करोड़ो टाका देत तैयो अपन शरीर कोना बेचि लेब ?'' टाल्सटाय हँसैत कहलथिन, ''यैह तँ हमरा बुझयबाक छल, जे एक-करोड़मे अपन शरीर नहि बेचि सकैत अछि, से यदि कहय जे हमरा कोनो पूजी-पगहा नहि अछि, बड़ गरीब छी, जीवन सँ निराश छी, तँ कोना ई बात मानल जाय ? **आँखि, हाथ, पयर तथा ई शरीर मनुष्यक बड़ पैघ पूजी थिकैक। यदि एकरा बूझी आ पूरा परिश्रम करी तँ धन स्वयं अहाँक पयर लोटाय लागत ।**'' युवकक आँखि खूजि गेलैक ।

- कुलानंद नंदन

●

11

तरकारीक कुश्ती

एक समय तरकारी सबमे, बजरल त्वंचाहंच
बहुत कालधरि घोलफचक्का, केओ न मानय पंच ।

तरकारीमे फरकारी जे, फानल रामतरोइ
सुकुमारिक आङुर सभ सुन्दर, हम देखायमे होइ ।

खन तरुआ, खन भुजिया कौखन, हम लस-लस रसदार
लसफसिएमे भेटय विटामिन, जानै भरि संसार ।

लत्तीसँ लटकल झुङनीवेँ, छक दय रेलकै छूबि
हमसबसँ शीतल तरकारी, देखौ कनिए डूबि ।

कोनो टाट पर बान्हि हँसेरी, गुम्हरल सिमसिम सीम
आलू भांटा संग मीलि कय, जीतय हमरे टीम ।

अकचकाय ऊठल बाड़ीमे, भाटा घौदा-मौदा
सबसँ पहिने गुदरीमे, हमरे पटैत अछि सौदा ।

बुड़ल वंश छौ तरकारी केर, सबकेँ होइ छौ धोखा
चट दय पाकि आगिमे, रेडीमेड हमहि छी चोखा ।

कब-कब लागल बात ओलवेँ, चोखा हमही फस्ट
भादवमे राजा वा चोरक, भोग हमहि सुस्पष्ट ।

क्रोधेँ लाल टमाटर बाजल, हमर करै छैं छटनी
चोखा-चोखा चिचिआइत छैं, हम सबसँ बढ़ि चटनी ।

मचमचबैत मचान अपन, फुफकारि उठल सजमनिआ
चढ़ि मचानपर जँ नहि लुधकी, कते देत पेटकुनिआ ।

तीसी संग मीलि हमही, बनबै छी स्वाद विशेष
हीत-मीतकेँ मङनीमे, हमही ने बनी सनेस ।

भेल फूलि फुटबॉल चारसँ, गुड़कल क्रुद्ध कदीमा
तरकारीमे मेलभाव राखाक, अछि हमरे जिम्मा ।

छोट-पैघ जँ भोज-भात हो, डलना केर होइछ सङोर
हमही अगिला मुहरा ओहिमे, एकसर झूठ परोड़ ।

चर्चा होइतहि तड़कि उठल, रौ राजा हमहि परोड़
तोँ सब ब्यर्थ मारि करै छैं, सबसँ बुद्धिक खोड़ ।
तोरासबकेँ के पूछै छौ, जखन खासैछ बजार
हमरसंग ठठि सकय एकेटा, आलू हमर भजार ।

एतेक काल तँ चुप्प छलय, चटकौलक कोबी फूल
अरे परोड़, केहन बान्है अछि, अपन प्रशंसा - पूल ।

तरकारी केर तरकारी, आ देखायमे छी फूल
अपनामे उठुम-बजरा, तोँ सब जुनि करै फजूल ।

माटिक तरसँ अलगि उठल, सीसापानी जे आलू
हैऐ एलियौ, बहुत फटकलें, तों सब छैं बड़ चालू ।

एकोटा नहि बेर काल पर, तोँ सब आबै काज
सालो भरि हमहीं पतिराखन, जानय सकल समाज ।

- राजानन्द झा

प्रश्न ओ अभ्यास

पाठमे

(क) एहि प्रश्नक उत्तर दिअ ।

1. तरकारी सभक बीच की भेल ?
2. एहि पाठमे कोन कोन तरकारीक नाम आयल अछि ?
3. ओल कोन मासमे होइत छैक ? एकर स्वाद केहन होइत छैक ?
4. भोज-भातमे कोन तरकारी बनैत अछि ?
5. कोन एहन तरकारी छैक जे बारहो मास उपयोगमे अबैत अछि ?

(ख) खाली स्थान कें भरू ।

1. ..... राजा वा चोरक, ... हमहिं सुस्पष्ट ।
2. छोट-पैघ जँ भोज-भात हो, ... केर होइछ सङोर ।
3. अपनामे उठ्ठम बजरा, तौं सब ..... करै फजूल ।
4. सालोभरि हमहीं ..... जानय सकल समाज ।

(ग) एहि पाँतीकें शुद्ध कय लिखू ।

1. खन तरुआ, खन भुजिया, कौखन हम रस-रस रसदार ।
2. कचकचाय ऊठल बाड़ीमे, भाटा घौंदा-मौंदा ।
3. कोनो बाट पर बान्हि हँसेरी, गुड़कल सिमसिम सीम ।
4. चर्चा होइतहि कड़कि उठल, रौ राजा हमहि परोड़ ।
5. हैऐ एलियौ, बहुत लटकलें, तौ सब छैं बड़ चालू ।

भाषा अध्ययन

(घ) 1. एहन शब्द जाहिसँ काज करबाक बोध होइत छैक, तकरा क्रिया कहल जाइत छैक। प्रस्तुत पाठसँ क्रिया-शब्दकेँ ताकि सूची बनाउ । जेना - फानल, जानै, छूबि, ..., ..., ..., ...

2. एहन शब्द जाहिसँ कोनो संज्ञा वा सर्वनामक विशेषताक अनुभव होइत छैक, तकरा विशेषण कहल जाइत छैक । एहि पाठसँ विशेषण शब्द ताकू । जेना - सुन्दर, लस-लस, शीतल, ..., ..., ..., ...

पाठसँ आगू

(ङ) 1. एहि पाठमे आयल तरकारीक संग-संग आनो तरकारी सभक सम्बन्धमे जानकारी प्राप्त कय ओकरा नीचा लिखल सारणीमे सजाउ ।

तरकारी (एहन जे माँटि तरमे उपजैत हो ।)	फरकारी (एहन जे फल रूपमे गाछ मे फड़ैत हो।)
ओल	रामतरोइ ....

2. अपन पुस्तक आ शिक्षकसँ जानकारी प्राप्त करू जे कोन तरकारीमे की सब रहैत छैक आ ओकरा खयलासँ मनुष्यकेँ की सब लाभ होइत छैक । एहिसब बात केँ नीचा लिखल अनुसार एकटा चार्ट-पेपर पर सुन्दर अक्षरमे लीखि वर्गमे टाङू ।

तरकारीक नाम	उपस्थित खनिज ओ विटामिन	खयलासँ लाभ

शब्दार्थ

त्वंचाहंच – आपसी विवाद ।

घोलफचक्का – हल्ला होयब ।

फरकारी – फल प्रजातिक व्यञ्जन ।

हसेरी – झगड़ा करबाक हेतु संगठित लोकक समूह ।

सिमसिम – कनेक भीजल ।

अकचक्कायब – आलसक संग उठब ।

घौंदा–मौदा – गुच्छा

गुदरी – तरकारीक अस्थायी बाजार ।

कब–कब – ओलक स्वादक अनुभव ।

छक दय लागब – छूअब/अधलाह लागब ।

सुस्पष्ट – नीकजकाँ, फड़िछायल ।

चटनी – अम्मत व्यञ्जन जे आङुरसँ चाटल जाय ।

मचमचायब – मच–मच शब्द करब ।

फुफकार छोड़ब – साँप द्वारा कयल शब्द, अत्यन्त क्रोधसँ एकाएक बाजब।

पेटकुनिया देब – पेटक भरे पड़ब ।

गुड़कब – गोल वस्तुक चलब ।

डलना – विभिन्न तरकारीक मिश्रण, चर्चरी ।

सङोर – व्यवस्था, जुटायब/एकठ्ठा करब ।

मुहड़ा – मुख्य, रेलगाड़ीक इंजन ।

तड़कब – कड़ा स्वरमे बाजब ।

खोड़ – तौला ।

बुद्धिक खोड़ – संकुचित बुद्धि ।

बजार खसब – सस्ता होयब ।

ठठब – सकब, संग देब ।

भजार – मित्र

चटकायब – डाँटब

उठुम- बजरा – झगड़ा, पटकम पटका ।

फजूल – व्यर्थ, बेकार, निरर्थक ।

अलगब – सतहसँ उपर उठब ।

फटकब – गप्प हाँकब, आत्म प्रशंसा करब ।

चालू होयब – धूर्त्त होयब ।

पतिराखन – प्रतिष्ठा राखय बला ।

तरकारी – जमीनक भीतर फड़ प्रजातिक व्यञ्जन ।

लुधकब – एक्के ठाम जमा होयब/गुच्छामे होयब ।

मचान – बाँस आदिसँ बनल लत्ती लतरयबाक स्थान ।

सनेस – उपहार, बएन

चार – खढ़-बाँससँ बनल छत, छप्पर

●

12

हॉकीक जादूगर

खेलक मैदानमे धक्का-मुक्की आ मारि-पीटक घटना तँ होइते रहैत छैक । जहिया हमरालोकनि खेलाइत रही तहियो ई सब होइत रहैक ।

सन् 1933क कथा थिक । ओहि समयमे हम पंजाब-रेजिमेंट दिससँ खेलाइत रही। एक दिन पंजाब रेजिमेंट आ सैपर्स एन्ड माइनर्स टीमक बीच खेल चलि रहल छल । माइनर्स टीमक खेलाड़ी हमरासँ गेन छिनबाक प्रयास, अनेको बेर कयलक, परन्तु सब बेर असफल भय जाइत छल । तखनहि एकटा खेलाड़ी खौंझा कय हॉकी हमरा माथ पर बजारि देलक । हमरा मैदानसँ बाहर लय आनल गेल ।

थोड़बे कालक बाद हम पट्टी बान्हि फेरो मैदानमे पहुँचि गेलहुँ आ ओहि खेलाड़ीक पीठ पर हाथ राखि कहलियैक– "तौं चिन्ता नहि करह । एकर बदला तँ हम लेबे करबह । ई सुनितहि ओ खेलाड़ी डेरा गेल । आब सदिखन हमरे पर ओकर ध्यान रहैक जे कखनो हम ओकरा माथ पर हॉकी ने बजारि दियैक । हम एकक बाद दोसर लगातार छौटा गोल कय देलियैक । खेल समाप्त भेलाक बाद हम ओकर पीठ हँसोथैत कहलियैक–"बाउ ! खेलमे एतेक तामस नीक नहि। हम तँ अपन बदला लय लेलहुँ। जँ तो हमरा हॉकीसँ मारितह नै, तँ सम्भव छलै जे हम तोरा दुइये गोलसँ हरबितहुँ ।" ओ खेलाड़ी वास्तवमे बड़ लज्जित भेल । तँ देखलहुँ, हमर बदला लेबाक ढंग । विश्वास करू, गलत काज करय बाला व्यक्ति सदिखन डेरायल रहैत अछि, जे ओकरो संग ने गलत भय जाइक ।

आइयो जँ हम कतौ जाइत छी, तँ बच्चा एवं बूढ़ सब हमरा घेरि हमर सफलताक रहस्य जानय चाहैत छथि । हमरा लग सफलताक कोनो गुरकिल्ली तँ अछि नहि । हम सबसँ यैह कहैत छियनि जे तन्मयता, साधना आ खेल–भावना– सफलताक मूलमंत्र थिक ।

हमर जन्म सन् 1904 ई० में 'प्रयागमे एकटा साधारण परिवारमे भेल । बादमे हमरालोकनि 'झाँसीमे बसि गेलहुँ । 16 वर्षक अवस्थामे हम 'फर्स्ट ब्राह्मण रेजिमेंट' मे एकटा साधारण सिपाहीक रूपमे भर्त्ती भय गेलहुँ । हॉकीक खेलमे हमरा रेजिमेंटक बड़ धाख छलैक । लेकिन खेलसँ हमरा कोनो लगाव नहि छल । ओहि समयमे हमरा रेजिमेंटक सूबेदार छलाह मेजर तिवारी । ओ बेर-बेर हमरा हॉकी खेलयबाक हेतु कहथि । हमरा छावनीमे हॉकी खेलयबाक कोनो निश्चित समय नहि छलैक । सैनिक सबकेँ जखन इच्छा होइनि मैदानमे आबि जाइत छलाह आ अभ्यास शुरू कय दैत छलाह । ओहि समय मे हम एकटा नवसिक्खू खेलाड़ी छलहुँ ।

जेना–जेना खेलमे हम निपुण होइत गेलहुँ, तहिना–तहिना हमरा पदोन्नति सेहो होइत गेल। सन् 1936 ई० मे हमरा बर्लिन ओलम्पिकमे कप्तान बनाओल गेल । ओहि समयमे हम सेनामे लांसनायक छलहुँ । बर्लिन ओलम्पिकमे हमर हॉकी खेलयबाक ढ़ंग देखि लोक सब ततेक ने प्रभावित भेल जे सब हमरा **'हॉकीक जादूगर'** कहनाइ शुरू कय देलक । लेकिन एकर ई अर्थ

नहि जे सबटा गोल हमहीं करैत छलहुँ। हमरतँ सतत प्रयास ई रहैत छल जे गेनकेँ गोलक समीप लय जा कय अपन टीमक कोनो संगी खेलाड़ीकेँ दय दियनि, जाहिसँ गोल करबाक श्रेय हुनका भेटि जाइनि। अपन एही खेल-भावनासँ हम सम्पूर्ण विश्वक खेलप्रेमी लोकनिक मन जीति लेलियनि। बर्लिन ओलम्पिकमे हमरा लोकनिकेँ स्वर्णपदक भेटल।

खेलाइत काल हम सदिखन एतबे ध्यान रखलहुँ जे हारि अथवा जीत हमर नहि, बल्कि सम्पूर्ण देशक होइत छैक।

– ध्यानचंद

प्रश्न आ अभ्यास

पाठमे

(क) निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर दिअ।

1. ध्यानचंद अपन बदला कोना लेलनि ?
2. ध्यानचंदक सफलताक रहस्य की छलनि ?
3. दोसर टीमक खेलाड़ी ध्यानचंदकेँ हॉकीसँ किएक मारलक ?
4. ध्यानचंद जखन ओकरासँ बदला लेबाक गप्प कहलनि, तँ ओ किएक डेरा गेल?
5. 'बाउ ! खेलमे एतेक तामस नीक नहि' – ध्यानचंद एना किएक कहलनि ?
6. सफलताक मूल मंत्र की थिक ?

(ख) एहि पाठकेँ पढ़लाक बाद अहाँ ध्यानचंदक सम्बन्धमे बहुत रास बात जनलहुँ, ओहिमेसँ कोनो दू गोट बात एतय लिखू।

.....

.....

(ग) अनुमान करू ।

1. जँ ध्यानचंद हॉकी नहि खेलइतथि तँ ओ की करितथि ?
2. ध्यानचंदक स्थान पर जँ अहाँ रहितहुँ तँ कोना बदला लितहुँ ?
3. खेलयबाकाल झगड़ा किएक होइत छैक ?
4. की खेलयबाकाल अहूँक संग कहियो एना भेल अछि ? ओहि समयमे अहाँ की कयलहुँ ।

(घ) कहू ! एहिमे की सत्य अछि ?

1. एकटा खेलाड़ी खौंझा कय हमरा माथ पर हॉकी बजारि देलक । ☐
2. बाउ ! खेलमे तामस बड़ नीक । ☐
3. तन्मयता, साधन आ खेल भावना- सफलताक मूल मंत्र थिक । ☐
4. 1938 ई० मे बर्लिनमे ओलम्पिक खेल भेल । ☐
5. हमर खेल देखि सब हमरा हॉकीक जादूगर कहय लागल । ☐

(ङ) खाली स्थानकेँ भरू ।

1. सन् ..... ई० मे ध्यानचंदकेँ ओलम्पिकमे ..... बनाओल गेल ।
2. बर्लिन ओलम्पिक मे ध्यानचंदक टीमकेँ ..... पदक भेटल ।
3. हमर हॉकी खेलयबाक ढ़ंग देखि लोक ततेक ने ..... भेल जे सब हमरा हॉकीक ..... कहनाइ शुरू कयलक ।

भाषा-अध्ययन

(च) 1. एहन चारि गोट शब्द बनाउ ।

धक्का-मुक्की, मारि-पीट, ..., ..., ..., ...

2. पाठमे आयल शब्दक वचन निर्धारित करू ।

एकवचन (कोनो एक सजीव या निर्जीव वस्तु)	बहुवचन (एकसँ अधिक सजीव या निर्जीव वस्तु)
हम	टीम
.....	.....
.....	.....
.....	.....

पाठसँ आगू

(छ) 1. एहि चित्र सबमेसँ हॉकीक खेलक सामानकेँ चीन्हू ।

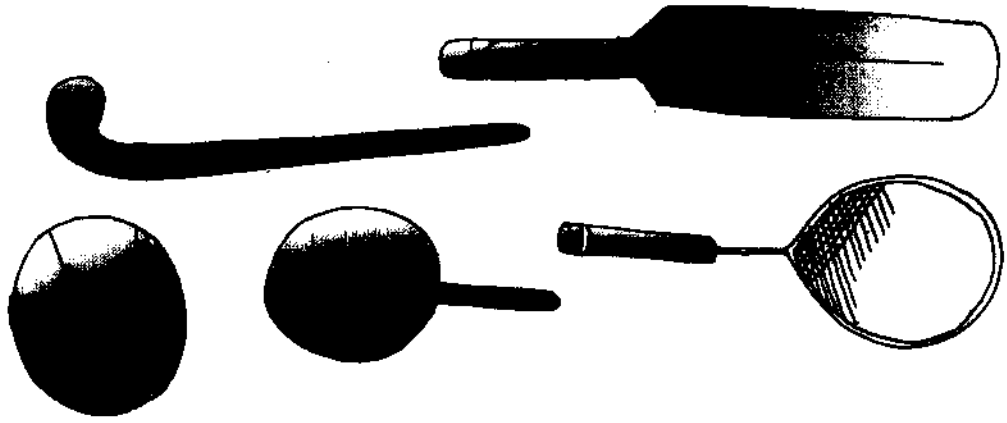

2. टीम बनाउ

मानि लिय जे अहाँकेँ अपन स्कूलमे खेलक अनेको टीम बनयबाक अछि, जे अपनामे हॉकी-मैच खेला सकय ।

- खेल हेतु कोन-कोन वस्तुक ओरिआओन करब ।
- खेलक नियम आ शर्त्त तैयार करू ।

(ज) 1. अपन मित्रसँ ज्ञात करू जे ओकरा खेलयबाकाल कहिआ- कहिआ झगड़ा भेलैक? ओहि समयमे ओ की कयलक ?

2. समाचार-पत्र में प्रतिदिन छपयबला समाचारमेसँ रूचिगर समाचारकेँ काटि कय राखू ।

शब्दार्थ

तन्मयता - ध्यानसँ कोनो कार्य करब ।

साधना - अभ्यास

धाख - प्रतिष्ठा

लगाव - रूचि

तन्मयता, साधना आ खेल भावना-सफलताक मूल मंत्र थिक

●

13

भिनसर

चुह-चुह करइत चुहचुहिआ

रतिगरे कानमे किछु कहइत अछि ।

निन्न टूटने टुन्ना मुन्नी

फुद-फुद गप्प जेना करइत अछि ।।

बाड़िक आमक डारिसँ

कोइली कुहुकि रहल अछि ओहिना ।

मायक कोरा बैसि हुलसि कय

छी बजैत रस-रस हम जेहिना ।।

पुरबा हबा दुलारू कतवा

गाछ-वृच्छ चट माथ डोलाबथि ।

अपन कान्ह पर चढ़ा-चढ़ा कय

बाबू हमरा जेना घुमावथि ।।

फूल-फूल सँ मधु बटोरि कय

रने-वने भमरा उड़ैत अछि ।

लय जलखड़ी आम बीछै जनु

छौंड़ा सभ गाछी घुमैत अछि ।।

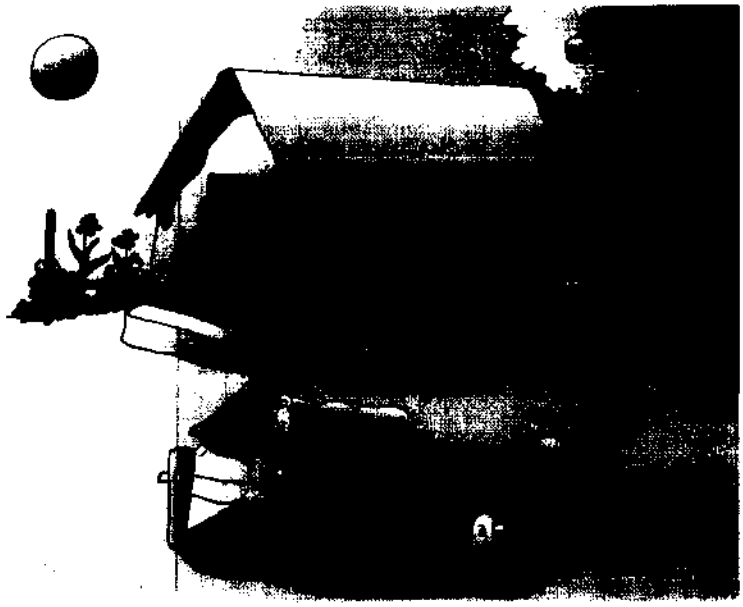

चट-चट कय फूलक कोंढ़ी सभ

फुला रहल अछि अपने फुरने ।

बिना जगौने आँखि मीड़ि हम

उठि जाइत छी भोरे अपने ।।

चुन-चुन करए चिड़ै-चुनमुन्नी

फुदुकि एम्हर ओमहर हो जेहिना

घर-घर सँ जुटि कैं हमरा सभ

खेल-कूद मे लागी तेहिना ।।

काका केर सूगा पिजड़ा मे

'राम-राम' सुनबए लागल ई ।

गुरु कैँ पाठ सुनाबए पड़ते

की हमरो चेतबए लागल ई ?

- सुरेन्द्र झा 'सुमन'

प्रश्न ओ अभ्यास

पाठमे

(क) एहि प्रश्नक उत्तर लिखू ।

1. अहाँ जखन भिनसरमे उठैत छी, तँ चारूकात देखबामे केहन लगैत अछि ?
2. अहाँक परिवारक लोकसभ भिनसरे उठि की सभ करैत छथि ?
3. एहि कवितामे भिनसरक वर्णन आ अहाँक गाम - घरक भिनसरमे की सभ अन्तर अहाँकेँ बुझाइत अछि ?

(ख) एहि पाँतीकेँ पूरा करू ।

1. बाड़िक आमक डारि डारि सँ

   .....

   .....

   छी बजैत रस-रस हम जेहिना ।।

2. काका केर सूगा पिजड़ा मे

   .....

   गुरु कैँ पाठ सुनाबय पड़ते

   ..... ।।

(ग) कहू, एहिमे की सत्य अछि ।

1. चुह चुह करैत चुहचुहिआ रतिगरे कान मे किछु नहि कहैत अछि ।
2. मायक कोरा बैसि चिकरि कय छी बजैत रस-रस हम जेहिना ।
3. बिना जगौने आँखि मीड़ि हम उठि जाइत छी भोरे अपने ।
4. गुरूकेँ पाठ सुनाबय पड़ते की हमरो चेतबए लागल ई ।

(घ) 1. एहन शब्द जकर रूप कोनो स्थिति मे नहि बदलैत छैक, अव्यय कहल जाइत छैक ।

अव्यय शब्दक सुची पाठक आधार पर बनाउ । जेना,

चुह-चुह, फुद-फुद, रस-रस, ..., ..., ..., ...

2. एक दोसरसँ जोड़ि एहि प्रकारक शब्दक जोड़ा बनाउ ।

गाछ- वृच्छ, रने-बने, खेल-कूद, ..., ..., ..., ..., ...,

....., ..., ...,

3. तुक बैसाउ ।

जेना- तेना	.....	.....	.....	
रहल-	.....	.....	.....	
माथ -	.....	.....	.....	
घर -	.....	.....	.....	
आम -	.....	.....	.....	
फूल -	.....	.....	.....	
रतिगर -	.....	.....	.....	

(ङ) एहि पाठमे आयल शब्द सभकेँ एहि सारणी मे सजाउ ।

शब्द

संज्ञा	सर्वनाम	क्रिया	विशेषण
व्यक्ति/जन्तु/ वस्तु/स्थानक नाम	संज्ञाक बदलामे प्रयोग होअय बला शब्द	जाहिसँ कार्य करबाक बोध हो।	संज्ञाक विशेषताक बोध हो
चुहचुहिया	किछु	कहइत	दुलारू

(च) एहि कविताकेँ वर्गमे शुद्ध-शुद्ध आ स्पष्ट स्वरमे गाउ ।

पाठसँ आगू

(छ) 1. 'भिनसर' क दृश्यसँ सम्बन्धित आन कविताक सकलन करू ।

2. भिनसरक दृश्यक एकटा सुन्दर चित्र बनाउ ।

शब्दार्थ

हुलसि कय – प्रसन्न भय कय

भमरा – भौंरा

जलखड़ी – जाल बला झोरा

●

14

डा0 जगदीशचन्द्र बसु

गाछो-पातमे जीवन होइत छैक । ओहो हमरे सबहक समान खाइत-पिबैत अछि, हँसैत-कनैत अछि आ सुख-दुःखक अनुभव करैत अछि । एहि बातकेँ जे सिद्ध कयलनि से छलाह-डा० जगदीशचन्द्र बसु । बसु अपन एहि खोजसँ विश्वप्रसिद्ध भय गेलाह।

बालक जगदीशक जन्म 30 नवंबर, 1850 ई० केँ ढाकामे भेलनि । हिनक पिता भगवानचन्द्र बसु फरीदपुरक डिप्टी कलकटर छलाह । जगदीशकेँ बच्चहिसँ गाछ-वृक्षमे रुचि छलनि । ओ अपन आरम्भिक शिक्षा गामेक विद्यालयमे पूरा कयलनि आ तकराबाद कोलकाताक सेंट जेवियर कॉलेजसँ बी० एस-सी० कयलाक बाद लंदन चलि गेलाह। लंदनसँ एम० एस-सी० क परीक्षा पास कय कोलकाताक प्रेसिडेंसी कॉलेजमे प्राध्यापक भय गेलाह।

ओ अपन घरेमे एकटा छोट सन प्रयोगशाला बनाय नव-नव खोज करब आरम्भ कय देलनि । एतहि ओ रेडियो-तरंग आ बिजलीक सम्बन्धमे खोज कयलनि । बादमे लंदन विश्वविद्यालय, हुनका एहि खोज हेतु 'डाक्टर ऑफ साइंस' के उपाधिसँ सम्मानित कयलकनि।

डा० जगदीशचन्द्रक बाल्यकालक एकटा छोट सन घटना अछि । एक दिन साँझमे हुनक माय तुलसीक गाछकेँ धूप-दीपसँ साँझ देखा रहलि छलीह कि लगहिमे ठाढ़ जगदीशचन्द्र बसु तुलसीक एकटा पात तोड़ि मुँहमे धय लेलनि ।

एहि पर माय हुनका बुझौलथिन्ह - "बाउ ! सूर्यास्तक बाद कोनहु गाछक पातकेँ नहि तोड़बाक चाही ।"

"माय, किएक नहि तोड़बाक चाही ?" - बालक जगदीश प्रश्न कयलथिन ।

"एहि दुआरे जे गाछ सूतल रहैत छैक ।"- माय कहलथिन ।

मायक गप्प सुनि जगदीशकेँ बड़ आश्चर्य भेलनि । ओ मायसँ पुछलथिन,

"गाछकेँ कोनो की हमरासभ जकाँ प्राण होइत छैक, जे ओ सूतत ?"

"नहि, ईहो सब जीवधारी थिक । एखन ताँ बच्चा छह । जखन पैघ होयबह आ पढ़बह-लिखबह, तखन सबटा बूझि जयबहक"- माय बुझौलथिन ।

तहियासँ जगदीशक गाछ-वृक्षक प्रति व्यवहार बदलि गेलनि । आब ओ बाट चलैत ने कोनो गाछकेँ उखाड़ैत छलाह आ ने ओकर एकोटा पात तोड़ैत छलाह ।

की अहाँ लजविज्जीक गाछ देखने छियैक ? ओकरा छुबितहि ओकर पात छत्ता जकाँ बंद भय जाइत छैक आ सूर्यास्तो भेलाक बाद ओकर पात सब बंद भय जाइत छैक । 'सूर्यमुखी' फूल सदिखन सूर्य दिस घूमल रहैत छैक ।

अपन प्रयोगसँ जगदीशचन्द्र बसु सिद्ध कयलनि जे गाछ-वृक्ष आ वनस्पति सभ हमरे सभक समान भूख-पिआस, ठंढ़ा-गर्म, सुख-दुःख आदिक अनुभव करैत अछि । जखन ओकरा काटल जाइत छैक तँ ओकरो आन जीव-जन्तुक समान पीड़ा होइत छैक। ओकरो मे श्वसन-क्रिया आ धड़कन होइत छैक । विषक घातक प्रभाव ओकरो पर पड़ैत छैक । एतबे नहि, नीक-भोजन आ संगीतक नीक प्रभाव गाछ आ वनस्पति पर सेहो पड़ैत छैक ।

डा० जगदीशचन्द्र बोस गाछमे होमय बला विभिन्न क्रियाकेँ जनबाक लेल अनेको सूक्ष्म यन्त्रक निर्माण कयलनि । हुनक खोजसँ सँसे विश्व प्रभावित भेल । जर्मनीक वैज्ञानिक लोकनि अपन पूरा विश्वविद्यालयेकेँ अपना नियंत्रणमे लय लेबाक लेल हुनकासँ अनुरोध कयलथिन । परन्तु डा० बसु कहलथिन – "हमर कार्य-क्षेत्र भारते रहत आ हम अपना देशक ओही विश्वविद्यालयमे कार्य करैत रहब, जतय हम ओहि समयमे कार्य आरम्भ कयल जहिया हमरा केओ जनैत नहि रहय।"

डा० बसु अपन प्रयोगशालाक नाम रखलनि- 'बसु विज्ञान मंदिर' । एतय डा० बसु द्वारा बनाओल तथा प्रयोग कयल गेल यन्त्र सब आइयो सुरक्षित छैक ।

डा० जगदीशचन्द्र बोसक देहांत 23 नवम्बर, 1936 ई० केँ भय गेलनि । परन्तु हुनक नाम विश्वक महान वैज्ञानिकक रूपमे अमर रहत ।

– बाल गोविन्द झा 'व्यथित'

प्रश्न ओ अभ्यास

पाठमे

(क) एहि प्रश्नक उत्तर लिखू -

1. जगदीशचन्द्र बसु के छलाह ?
2. जगदीशचन्द्र बसुक जन्म कहिया आ कतय भेलनि ?
3. हुनक पिताक नाम की छलनि आ ओ की करैत छलाह ?
4. जगदीशचन्द्र बसुक शिक्षा-दीक्षा कतय भेलनि ।
5. जगदीशक व्यवहार गाछ-वृक्षक प्रति कोना बदलि गेलनि ?
6. जगदीशचन्द्र बसु अपन प्रयोग द्वारा की सिद्ध कयलनि ?
7. लंदन विश्वविद्यालय हुनका कोन उपाधिसँ सम्मानित कयलकनि ?

(ख) खाली स्थानकेँ भरू ।

1. गाछो-पातमे ..... छैक ।
2. बालक जगदीशकेँ बच्चहिसँ ..... रूचि छलनि ।
3. नीक भोजन आ संगीतक ..... प्रभाव गाछ आ ..... पर सेहो पड़ैत छैक ।
4. डा० बसु अपन प्रयोगशालाक नाम रखलनि ..... ।

(ग) कहू ! एहिमे की सत्य अछि ?

1. जगदीशचन्द्र बसुक पिता डाक्टर छलाह ।
2. बालक जगदीशक रूचि पशु-पक्षीमे छलनि ।
3. लंदनसँ एम० एस-सी० कयलाक बाद ओ कोलकाताक प्रेसिडेंसी कॉलेजमे प्राध्यापक भय गेलाह ।

4. 'सूर्यमुखी' क फूल सदिखन सूर्ये दिस घूमल रहैत छैक ।
5. गाछ-वृक्षमे प्राण नहि होइत छैक ।

(घ) के कहलनि ? ककरा कहलनि ?

1. "एहि दुआरे जे गाछ सूतल रहैत छैक ।"
2. "गाछकेँ कोनो की हमरासभ जकाँ प्राण होइत छैक ?"
3. "हमर कार्य-क्षेत्र भारते रहत आ हम अपन देशक ओही विश्वविद्यालयमे कार्य करैत रहब, जतय हम ओहि समयमे कार्य आरम्भ कयल, जहिया हमरा केओ जनैत नहि रहय ।"

भाषा-अध्ययन

(ङ) पाठमे आयल शब्दकेँ एहि खानामे भरू ।

शब्द

संज्ञा	सर्वनाम	क्रिया	विशेषण	अव्यय
व्यक्ति/वस्तुक नाम	नामका बदला आयल शब्द	जाहिसँ काज करबाक बोध हो	व्यक्ति आ वस्तुक विशेषता	ओ शब्द, जे कखनो बदलय नहि
गाछ	ओहो	खाइब	.....	नव-नव
जगदीशचन्द्र बोस	हिनक	तोड़ब	.....	
.....	.....	.....	.....	
.....	.....	.....	.....	

(च) जाहि संज्ञा शब्दसँ पुरुष जातिक बोध होइत छैक तकरा पुलिङ्ग आ जाहि संज्ञा शब्दसँ स्त्री जातिक बोध होइत छैक तकरा स्त्रीलिङ्ग कहल जाइत छैक । नीचा देल गेल शब्दक विपरीत लिङ्ग सोचि कय लिखू ।

पुलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुलिङ्ग
पिता	माता	नानी	नाना
भाय	.....	काकी	.....
दादा	.....	महींस	.....
बड़द	.....	घोड़ी	.....
बकरा	.....	कनिआ	.....
बाबा	.....	बेटी	.....

पाठसँ आगू :-

(छ) एहि चित्रकेँ चीन्हू ।

(ज) 1. विश्वक महान वैज्ञानिक सभक नामकेँ एकटा पैघ-कागज पर सुन्दर अक्षरमे लीखि वर्ग-कक्षमे टाँगू ।

2. 'लजविग्जी' आ 'सूर्यमुखी' सन गुणबला गाछ-वनस्पतिक सूची बनाउ ।

शब्दार्थ

अमर	–	जे मरय नहि ।
जीवधारी	–	जकरामे जीवन हो ।
प्राध्यापक	–	कॉलेजमे पढ़बयबला शिक्षक
पीड़ा	–	कष्ट
श्वसन	–	साँस
विष	–	जहर
यन्त्र	–	औजार, उपकरण

●

15

मिथिलाक्षर

१- कवर्गादि संयुक्ताक्षर

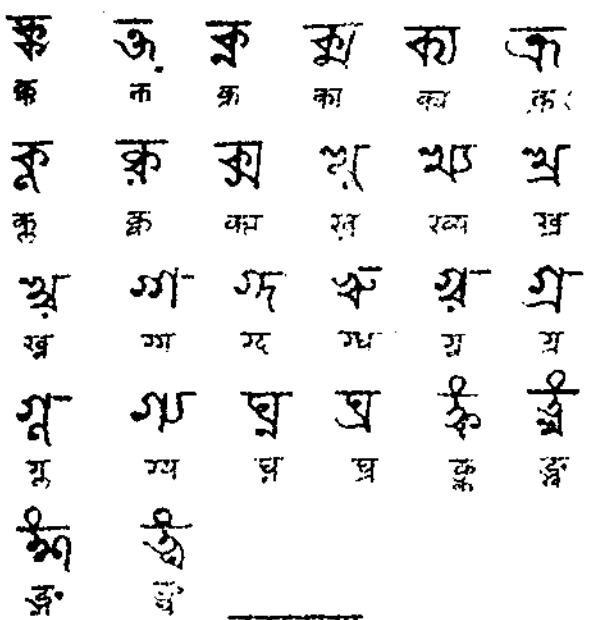

टिप्पणी :– किछु संयुक्ताक्षर यथा- क्म (क्म) क्ल (क्ल) क्स (क्स) क्क (क्क) आदि कें क्रमशः 'क्‌म' 'क्‌ल' 'क्‌स' 'क्‌क' एहुना लिखि सकैत छी।

२ – चवर्गादि संयुक्ताक्षर

उदाहरण :—

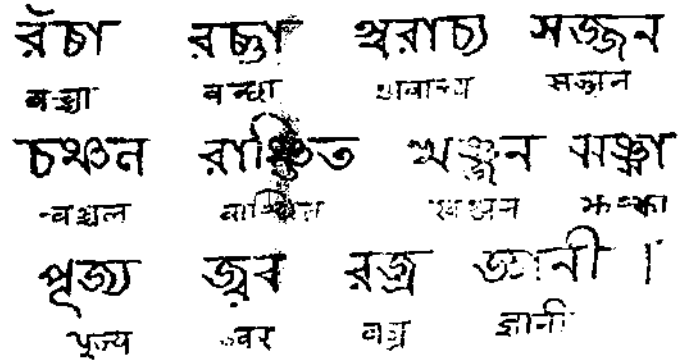

३ – टवर्गादि संयुक्ताक्षर

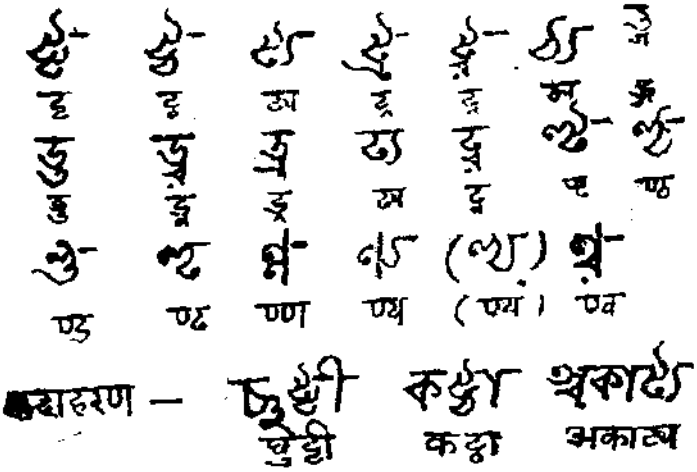

उदाहरण — चुट्टी कड्डा श्रकाण्ड
चुट्टी कड्डा अकाण्ड

ट्रेन पाठ्य खड्ग आढ्य

कण्टक लण्ठ पण्डित अक्षुण्ण

कण्व

४ - तवर्गादि संयुक्ताक्षर

हलन्त 'त्' तिरहुता में ' ' अथवा ' ' अथवा ' ' एहि रूपें लिखबाक परिपाटी अछि। जखन हलन्त 'त्' आन व्यञ्जन वर्ण सँ संयुक्त होइछ तखन एकर रूप अनेक प्रकारक भऽ जाइछ। देखू :-

त्क त्ख त्त त्थ त्र त्प त्फ

त्म त्य त्र त्व त्व त्स त्क्ष

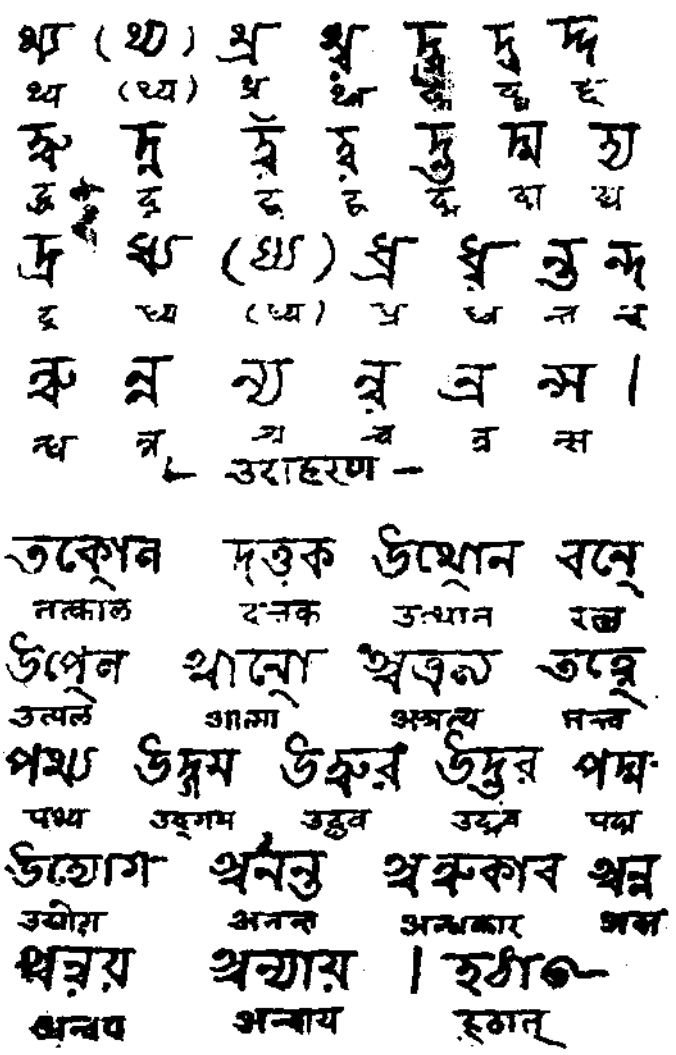

थ्य (थ्य) थ्र
उदाहरण
तत्काल दत्तक उत्थान रत्न
उत्पल आत्मा अमात्य तन्त्र
पथ्य उद्गम उद्भव पद्म
उद्योग अनन्त अन्धकार अन्न
अन्वय अन्याय हठात्

५- पवर्गादि संयुक्ताक्षर

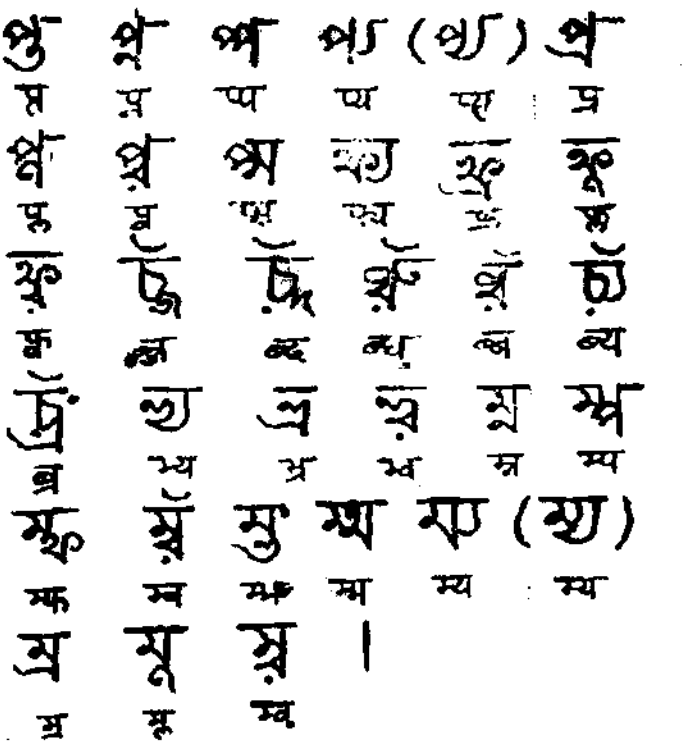

उदाहरण –

प्राप्त अप्राप्य अप्सरा

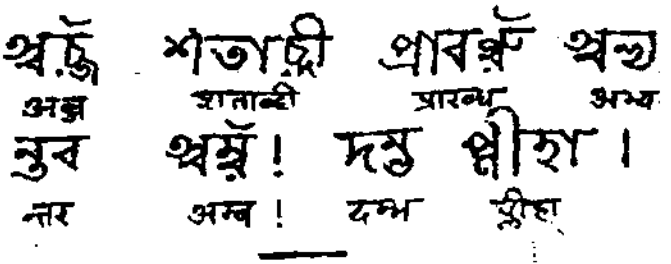

६- अन्तस्थादि संयुक्ताक्षर

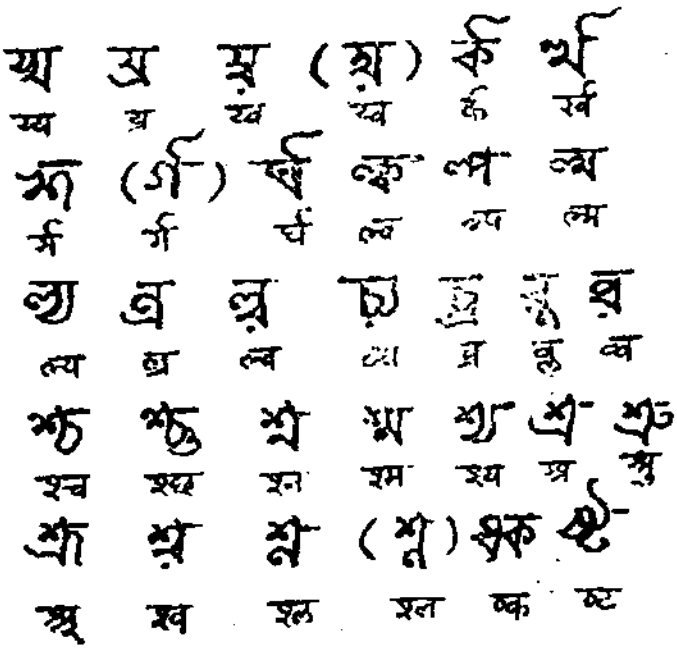

उदाहरण
दुर्गा
विश्व
दुष्कर
प्रतिष्ठा
उष्ण
संस्कृत

शब्दकोश

अ

अकचकायब	–	आलसक संग उठब ।
अगम	–	जतय नहि जयबा योग्य हो ।
अथाह	–	बहुत गहींर ।
अदना	–	आन
अन्य	–	दोसर
अबोध	–	जकरा ज्ञान नहि हो ।
अभेद	–	जकरा मे भेद नहि हो, अभिन्न
अमर	–	जे मरय नहि ।
अरवधि कय	–	जानि बूझि कय ।
अरुण	–	सूर्य
अलगव	–	सतह सँ ऊपर उठव ।
अलभ्य	–	जे आसानीसँ प्राप्त नहि हो ।
अवग्रह	–	संकट, समस्या
अविदित	–	जे नहि बूझल हो ।
असह	–	जे सहन नहि हो ।
अहंकार	–	घमंड
अज्ञान	–	मूर्ख

उ

उठुम-बजरा	-	झगड़ा, पटकम-पटका
उत्तम	-	नीक
उत्सुक	-	इच्छुक
उद्यत	-	तैयार
ऊँटक मुँहमे जीड़क फोड़न	-	आवश्यकता सँ बहुत कम होयब ।
अंग	-	शरीरक हिस्सा ।
कबकब	-	ओलक स्वादक अनुभव ।
करुणा	-	दया
किरण	-	प्रकाश
किरतिम कय	-	निश्चित रूप सँ ।
कुमति	-	खराब विचार
कीट	-	कीड़ा
कृतज्ञता	-	उपकारक भावना ।
खिताब	-	उपाधि
खोड़	-	तौला
गुड़कब	-	गोल वस्तुक चलब ।
गुदरी	-	तरकारीक अस्थायी बाजार ।
गोहाल	-	मालजालक रहबाक घर ।
घोलफचक्का	-	हल्ला होयब ।
घौंदा-मौदा	-	गुच्छा

चटकायब - डाँटब

चटनी - अम्मत व्यञ्जन जे आङ्गुरसँ चाटल जाय ।

चराउर - पशु-पक्षी द्वारा घूमि-फिरि कय घास दाना आदि खायब ।

चसकब - कोनो गलत काजकेँ बेर-बेर कय प्रसन्न होयब ।

चार - खढ़ सँ बनल छत, छप्पड़

चालू होयब - धूर्त्त होयब ।

चुहचुही - सुन्दर लागब ।

छक दय लागब - अधलाह लागब ।

जगदीश्वर - ईश्वर, जगत के मालिक ।

जलखड़ी - जाल बला झोड़ा ।

जुमब - एकठाम जमा हैब, वस्तु उपलब्ध हैब ।

जीवधारी - जकरामे जीवन हो ।

टराटक - एकटक

ठठब - सकब

ठोरपर फुफड़ी पड़ब - बहुत चिन्तित होयब ।

डलना - भिन्न-भिन्न तरकारीक मिश्रण, चर्चरी

डीह - आवासयोग्य भूमि ।

तड़कब - कड़ा शब्दमे बाजब

तन्मयता - ध्यानसँ कोनो कार्य करब ।

तरकारी - जमीनक भीतर फड़यबला प्रजातिक व्यञ्जन

त्वंचाहंच	–	आपसी विवाद
द्युतिमय	–	बिजली जकाँ ।
दोहन	–	दूहब, प्राप्त करब ।
दिग्गज	–	धुरंधार, बहुत नीक
धाख	–	प्रतिष्ठा
धुरखेड़ि	–	गर्दा–माटिसँ खेलायब ।
धोधि	–	चरबीसँ मोट भेल नमरल पेट ।
नचनी नाच नचायब	–	बहुत तंग करब ।
नभ	–	आकाश
नान्हिटा	–	छोटसन
निधोख	–	बिना डरकेँ ।
निर्यात	–	बस्तुकेँ बाहर पठायब ।
नीर	–	जल
पतिराखन	–	प्रतिष्ठा राखयबला ।
पतंग	–	फतिंगा
पथ	–	रास्ता
पद	–	पएर
पिल्ही चटकब	–	डेरा जायब ।
पीड़	–	कष्ट
पेटकुनिया देब	–	पेटक भरे पड़ब ।
पोषण	–	जीवन हेतु आवश्यक वस्तुक अर्थमे

पंगति	–	भोजन करबाक लेल बैसल लोक सबहक पंक्ति ।
प्रणाली	–	विधि
प्रदूषण	–	गंदगी
प्राध्यापक	–	कॉलेजमे पढ़बय बला शिक्षक ।
फजूल	–	व्यर्थ, बेकार, निरर्थक
फटकब	–	गप्प हाँकब, आत्म प्रशंसा करब ।
फरकारी	–	फल प्रजातिक व्यंजन ।
फुफकार छोड़ब	–	साप द्वारा कयल शब्द, अत्यन्त क्रोधसँ एकाएक बाजव ।
बजार खसब	–	सस्ता होयब ।
बन्धु	–	भाइ
बुद्धिक खोड़	–	संकुचित बुद्धि ।
बुधजन	–	बुद्धिमान व्यक्ति ।
भजार	–	मित्र
भमरा	–	भैंरा
मखब	–	पैरमे गंदा लागब ।
मचमचायब	–	मच-मच शब्द करब ।
मचान	–	बाँस आदि सँ बनल लत्ती लतरयबाक स्थान ।
मछवाह	–	माछक कारोबार करय बला ।
मछहर	–	जाल आदि उपकरणसँ पोखरिमे माछ मारब ।
मति	–	बुद्धि

मान्यता	–	विचार
माहुर भय जायब	–	तमसा जायब ।
मुहड़ा	–	मुख्य, रेलगाड़ीक इंजन ।
मोहार	–	पोखरिक कातक ऊँच स्थान ।
यन्त्र	–	औजार, उपकरण
लगाव	–	रुचि
लता	–	लत्ती
लहालोट	–	छटपटायब ।
लाम	–	लम्बा
लुधकब	–	एकठाम जमा होयब ।
लोल	–	मुँहक बाहरी हिस्सा ।
लंक लेब	–	पड़ा जायब ।
व्याधि	–	रोग, बीमारी
वरदान	–	आशीर्वाद
विपुल	–	पैघ, विशाल
विभेद	–	अंतर
स्वच्छ	–	साफ
श्वसन	–	साँस
सकल	–	सबटा, सम्पूर्ण
सङ्गोर	–	व्यवस्था जुटायब, एकट्ठा करब ।
सन्तति	–	संतान

सनेस	-	उपहार
सहरी	-	हड्डीक टुकड़ा ।
सहसा	-	एकाएक
साधना	-	अभ्यास
सिमसिम	-	कनेक भीजल ।
सुस्पष्ट	-	नीक जकाँ, फड़िछायल ।
संसाधन	-	सामग्री, उपयोगक वस्तु
हसेरी	-	मारि करबाक हेतु संगठित लोकक समूह ।
हलदिल्ली पैसब	-	विपत्तिक आशंका हैब ।
हिलकोर	-	लहरि
हुलसि कय	-	प्रशन्न भय कय ।
हेंज	-	झुण्ड

●